मानव मन्दिर

सितम्बर-अक्तूबर, 2019 (वर्ष-46 अंक 09-10)

विश्व में मानव-मात्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक कल्याण और विकास की सेवा में संलग्न पत्रिका

संस्थापक :

परमसन्त परमदयाल पं फ़कीर चन्द जी महाराज

दयाल कमल जी महाराज
09418370397

प्रबन्धक सम्पादक
श्री ब्रह्मशंकर जिम्पा
09417766913

प्रकाशक
श्री राणा रणबीर सिंह
09463115977

अनुक्रमणिका

1. शब्दों के सुमन- 04
2. दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज, संसार कल्पित है- 08
3. हजूर परमदयाल जी महाराजः गुरुमुखता- 16, सत्संग - 38
4. हजूर मानवदयाल जी महाराज, सत्संग - 58
5. दयाल कमल जी महाराज, गुरु पूर्णिमा उत्सव -64
6. दानी सज्जनों की सूची - 87

संपादक एवं ट्रस्ट अपनी पूर्व सन्त-परम्परा के विचारों के प्रति समर्पित है। शेष आचार्यों के विचार उनके व्यक्तिगत हैं, उनसे सहमति अनिवार्य नहीं।

Faqir Library Charitable Trust (Regd.)
Manavta Mandir, Manavta Mandir Road,
Hoshiarpur-146001 (Pb) Ph: 01882 243154
web: www.manavtamandirhsp.com
facebook.com/manavtamandirhsp

मूल्य : 20/-

शब्द

राधास्वामी नाम लिया अब, राधास्वामी धाम भी लो।
धर्म लिया और अर्थ लिया, मोक्ष लिया अब काम भी लो॥

चौरासी का चक्कर लगाकर, घूमे फिरे मारे-मारे।
मानुष जन्म मिला अब तुमको सत्लोक विश्राम भी लो॥

उम्र गुजर गई पूजा करते, मत्थे रगड़े शीश नवाये।
अब तो सुरत चढ़ा कर ऊपर, देवों से प्रणाम भी लो॥

गीत सुने बाहरी कानों से, अन्तर के दरवाजे बन्द।
दसवें द्वार चल कर अब तो, अंतर का इल्हाम भी लो॥

हरुफों का तो जाप किया, हरुपों ने कहीं पहुंचाया ना।
धुन पकड़ाये भरम मिटाये, ऐसे गुरु से नाम भी लो॥

बिन जिव्हा के नाम जो जपते, बिना कान के धुन सुनते।
बिन आँखों जो दर्शन करते, उनसे असल मुकाम भी लो॥

स्वाँसों स्वाँस जो सुमिरन होता, ऐसी युक्ति को ढूढों।
धनुष बाण बिन रावण मारे, 'गाफिल' ऐसा राम भी लो॥

— गाफिल शब्दावली से

गुरु बिन भेद बताए कौन, गुरु बिन प्यार कराए कौन।
बिछड़ गए कर्मों के मारे, 'गाफ़िल' उन्हें मिलाए कौन॥

परमदयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज की असीम अनुकम्पा और उनके रहमत सदके 'फकीर लाइब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट' उनके आदर्शों और विचारों को दुनिया में फैलाने के लिए सतत् प्रयासरत है। इस काम में जहाँ एक तरफ आप सभी सत्संगी भाई-बहनों का अनुकरणीय योगदान है वहीं दयाल कमल जी महाराज का आशीर्वाद, ट्रस्ट प्रधान आचार्य पं. ब्रह्मशंकर जिम्पा जी के दिशा निर्देश तथा सभी ट्रस्टीगणों का सहयोग एवं आचार्य कुलदीप शर्मा जी, आचार्य अरविन्द पाराशर जी का सहयोग उल्लेखनीय है।

आपके द्वारा दी गई सहयोग राशि से हम परमदयाल जी महाराज के उद्देश्यों को कार्यान्वित करने में सफल हो रहे हैं इस कड़ी में हमने मुम्बई के सत्संगियों द्वारा भेजी गई लेखन सामग्री शिवदेव राव एस.एस.के. हाई स्कूल के विद्यार्थियों को निशुल्क वितरित की। अमेरिका निवासी श्री राहुल भटनागर और उनके भाई श्री सुधीर भटनागर द्वारा हमें 10 किलोवाट

का सोलर प्लान्ट लगाने के लिए सहायता प्रदान की है। उनके पिता श्री आनन्द जी महाराज एवं श्रीमती विमला भूषण के नाम पर मेधावी छात्रों को 2500/- से 20000/- रु. तक की राशि एवं स्मृतिचिह्न प्रदान किए गए। गरीब विद्यार्थियों की दाखिला एवं ट्यूशन फीस माफ की गई।

मैं सभी सत्संगी भाईयों का जिनका योगदान परमदयाल जी महाराज के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु योगदान में सम्मिलित है, का हार्दिक धन्यवाद और साधुवाद करता हूँ तथा हमारा ट्रस्ट भी उनका ऋणी है।

कैनेडा व अमेरिका के सत्संगी भाई-बहनों के अनुरोध पर दयाल कमल जी महाराज 27 अगस्त से 6 अक्तूबर तक वहाँ का सत्संग-दौरा कर रहे हैं। उनसे बातचीत करने के इच्छुक सत्संगी उनके **Whatsapp** पर सम्पर्क कर सकते हैं।

18 नवम्बर, 2019 को दयालकमल जी महाराज की अध्यक्षता में परमसंत परमदयाल पं. फकीरचन्द जी महाराज का जन्मोत्सव मानवता मन्दिर प्रांगण में 'फकीर लाईब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट' द्वारा हर्षोल्लास से मनाया जायेगा। जिसमें आदरणीय आचार्यगण अपने अनुभवों से आप पर अमृतवर्षा

करेंगे। आप सभी सत्संगी भाई-बहनों से अनुरोध है कि बड़ी संख्या में पधारकर हमें सेवा का मौका दें।

आपकी सेवा में तत्पर फकीर लाइब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट के सभी ट्रस्टीगण।

संगत की सेवा में

आपका दास
राणा रणवीर सिंह, सचिव
फ़कीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट,
मानवता मन्दिर, होशियारपुर
मो. 09463115977
Email: ranbir_rahal@yahoo.in

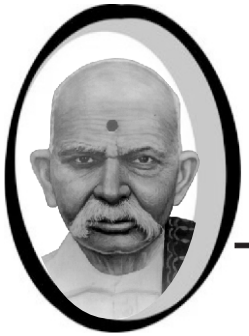

संसार कल्पित है

दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज

फिर वही बात आई। जो कुछ है भावना और कल्पना (ख्याल) ही है। इसे मेट दो, कहीं कुछ नहीं यह संसार जो भासता है और जिसमें हम फंसे हैं वह क्या है कल्पना ही तो है। संसार है। जिसको तुम मेरा कहते हो उसी से बँध जाते हो जिस को तेरा कहते हो उससे दूर भागते हो। एक मन की वृत्ति है। उसके दो रूप हैं- एक 'मेरापना' और दूसरा 'तेरापना' इसे कोई बिरला ही जानता है नहीं तो सब इसी में फँसे हुए दुख और कष्ट भोग रहे हैं। फिर भी इससे छुटकारा नहीं चाहते। मनुष्य को चाहिये कि इन दोनों को तोड़ दे परन्तु यदि वह इनमें से किसी एक को प्यार करता है तो उससे छुटने की दो युक्तियाँ है- एक तो इस प्रकार 'मेरा मेरा' करना जिससे 'मेरेपने' का अन्त हो जाए दूसरे इस प्रकार 'तेरा तेरा' करना कि यह वृत्ति भी अन्त को पहुंच जाये आदि और अन्त में बन्धन नहीं है। बन्धन केवल बीच में है। बीच की अवस्था को यदि तुम लाँघ जाओगे,स्वन्त्रता और मुक्ति की दशा में पहुंच जाओगे। यह हम तुमको सहज युक्ति बताते हैं। हम उस मनुष्य को गौरव की दृष्टि से देखते हैं जो साधारण रीति से

जगत का व्यवहार करता हुआ जीवन की अनेक अवस्थाओं को लाँघता जाता है। एक न एक दिन वह आप किनारे पहुंच जायेगा परन्तु यदि धैर्य नहीं है तो फिर 'मेरापना' और 'तेरापना' का अन्त कर दो जिसमें इसका भी परिणाम देखने में आये। यदि इसी 'मेरेतेरेपने' से गहरा सम्बन्ध है तब भी कुछ हर्ज नहीं इसको और भी गहरा और घना कर लो। फिर आप ही असलियत को जान लोगे।

जीव- आप क्या कह रहे हैं ? आप तो उलटे और फँसाने की शिक्षा दे रहे हैं। आपको इसके विरुद्ध कहना चाहिये।

शिव- हाँ जी हाँ! हम फँसाने ही की युक्ति बताते हैं। जब तक कोई भली भांति फँसेगा नहीं तब तक मुक्ति का विचार उसके मन में धँसेगा नहीं। यदि फँसना है तो अच्छी तरह से फँसों जिसमें इसका कुछ फल भी हो यों ही क्या कर रहे हो ?

जीव- यह उल्टी बात है।

शिव- उलटी नहीं, बात तो सीधी है परन्तु तुम्हारी समझ में कठिनता से आती है। तुमने बीच में रोक दिया नहीं तो हम बड़ी उत्तमता से समझा देते।

जीव- बहुत अच्छा! भूल हो गई! क्षमा कीजिए। अब आप कहते चलिये। मैं ध्यान के साथ सुनता चलूंगा।

शिव- सुनो! या तो ऐसे बनो कि मेरा तेरा पना तुम पर अपना प्रभाव न डाल सके और यदि मेरा तेरा पना करना ही है तो उसको आधा तिहाई न करो पूरा पूरा करो। बात तो यों है-

मोर तोर की जेबरी, बट बाँधा-संसार।
दास कबीरा क्यों बँधे, जाके नाम अधार॥

दूसरी बात यह है-

तू तू करता तू भया, मुझ में रही न मैं।
बारी तेरे नाम की, जित देखूँ तित तूँ॥

दो हो गई अब तीसरी सुनो-

मैं मैं करता मैं भया, तुझ में रही न तूँ।
बारी अपने रूप की, जित देखूँ तित तूँ॥

अब तुम समझे कि नहीं ?

जीव- अब तक नहीं समझा। आप पहेली बुझाते हैं। मैं इसको कैसे समझूँ ?

शिव- सुनो! बात तो सीधी साधी है परन्तु वास्तव में कठिनाई से समझ में आती है। पहली अवस्था परमहंसों की है जिनमें मेरा तेरा पना नाम का भी होता। इनकी सहज वृत्ति होती है। दूसरे लोग जो 'तेरा तेरा' करते रहते हैं वह भक्त जन हैं। उन्हें भगवन्त के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं देता, यहाँ तक कि वह अपने अंग प्रति अंग को भी उसी का रूप समझते हैं।

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागेगा मोर॥

इनकी दृष्टि में वही एक 'तेरा तेरा' और 'तू तू' करते रहना बस जाता है उन्हें और कुछ भी दिखलाई नहीं देता।

यह 'तू तू' करने का मार्ग है। जितना जी चाहे दिल खोल कर 'तेरा तेरा' करो। जहाँ विचार में दृढ़ता आई चित की एकाग्रता से सार वस्तु का ज्ञान आप ही आप होने लगेगा। यह पंथाइयों के मार्ग है और सुगम है। तीसरे यदि 'मैं मैं' करना है तो ज्ञानियों के मार्ग पर चलो। 'अहंब्रह्म' कहते हुए दिल को उभारते चलो तब तो बात है। जिसमें लगो सच्चे होकर लगो। आधा तीतर आधा बटेर ठीक नहीं। भक्ति और ज्ञान दोनों का आदर्श एक है। अपने मन के भाव को देखकर जो तुम्हें रुचे उसी से लौ लगाओ! हमें तो पंथाइयों का मार्ग अच्छा लगा उसी के प्रेमी हैं। वह चित्त को भा गया। उसी से शान्ति मिलती है परन्तु हम यह नहीं कहते कि सब लोग इसी मार्ग पर चलें।

जा का जासे मन रमा, ता को ता से काम।
सकल वासना त्याग कर, जपिये गुरु का नाम॥

ऊपर जो कुछ हमने लिखा है उसका तात्पर्य केवल यह है कि यह संसार कल्पित है। यदि हमसे घबराहट नहीं है तो फिर शिक्षा और उपदेश की आवश्यकता भी नहीं है। कोई न परमहंसों को शिक्षा देता है और न संसार में लम्पट मनुष्य को। इन दोनों को इसकी आवश्यकता नहीं। अब रहे द्विचिताई वाले। इनको दु:ख है और यह शिक्षा पाने के अधिकारी भी हैं। यदि किसी में 'तेरा पना' का भाव दृढ़ है तो वह मालिक से 'तेरे पने' का नाता जोड़े और उससे मिलकर सुख रूप हो जाये। यदि 'मेरेपने' की ओर ध्यान है तो सबका त्याग करे और ज्ञान की समझ लेकर त्याग करते हुए अपने रूप को पहिचान कर

सुख रूप बने। सुख रूप तो पहिले ही से है, केवल द्विचिताई का भ्रम है जिससे दुख पा रहा है। यह द्विचिताई जब तक न छूटेगी भ्रम दूर न होगा और भ्रम के दूर न होने से अपने रूप के सुख का भान न होगा अपनी निबल भावना को सबल भावना से परास्त करो और इसके लिये केवल यही दो ढंग हैं। यदि कोई तीसरा हो तो हम उसे नहीं जानते।

अब संसारी के कल्पित होने का दृष्टान्त सुनो।

दृष्टान्त (1)- किसी का लड़का मर गया। वह दुखी था। बुद्ध भगवान के पास पहुंचा। आपने पूछा, क्या चाहता है? वह बोला, 'अपने लड़के को एक बार देखने की इच्छा है।' उन्होंने कहा, 'अच्छा आंख बन्द कर।' जब उसने आंख बन्द की, देखता क्या है कि लड़का देवलोक में देवताओं के लड़कों के साथ खेल रहा है। इसने उससे मिलकर प्यार के साथ कहा 'अपने घर चल। हम सब तेरे लिये बहुत ही दुखी है।' लड़का बोला, क्यों? बात क्या है? उसने उत्तर दिया, 'तेरे बिना मेरा घर सूना हो गया। तेरी माता रात दिन विलाप करती रहती है।' उसने कहा, 'मेरा तेरा पना संसार है। न कोई मेरा है न तेरा है। यह केवल कल्पना मात्र है। मरने के साथ ही यह सम्बन्ध टूट गया। भ्रम को छोड़ दे। जा अपना काम कर। मुझ में पाप नहीं है। मैं इस नाते तो तोड़ चुका हूँ। अब मेरा तुझ से कोई सम्बन्ध नहीं है।

ना कोई मेरा ना कोई तेरा, सब है भर्म विकार।

मेरा तेरा वह करै, मन में जाके धमार॥

यदि मैं तेरा होता या यदि तू मेरा होता तो फिर मैं तुझ से अलग क्यों होता! तेरा तो यह शरीर भी नहीं है। कभी न कभी इसका भी त्याग हो जायेगा।' बाप यह सुन कर दंग रह गया।

आँख खुली, बुद्ध भगवान से बोला,
असलियत समझ में आ गई।

अब आप मुझे अपना शिष्य बनाइये। उन्होंने दीक्षा दी थोड़े दिनों में वह उनके सत्संग के प्रताप से कुछ का कुछ हो गया और संसार छूट गया।

दृष्टान्त (2) - किसी मनुष्य के परदेश यात्रा के समय पुत्र उत्पन्न हुआ। कई वर्ष पीछे लड़के की माँ ने लड़के से बाप के लिवा लाने की प्रार्थना की। वह बाप को बुलाने के लिये घर से निकला। उसका बाप भी घर लौट कर आ रहा था दोनों एक सराय में पहुंचे। लड़का पहिले पहुंचा था और एक कोठरी किराये पर ले ली थी। बाप देर से आया। उसे सराय में कोई कोठरी खाली नहीं मिली। उसने भटियारी को लालच दिया। वह लड़का बाहर निकाल दिया गया। बाप कोठरी में और लड़का बाहर सोया। एक दूसरे को पहिचानते नहीं थे। दूसरे दिन देखा गया तो लड़का सरदी खाकर मर गया था। जब पुलिस आई और उसका असबाब देखा गया माँ की चिट्ठी निकली जिसमें बाप को यह लिखा हुआ था कि यह तेरा लड़का है। जब बाप को पता लगा वह रोने चिल्लाने लगा 'हाय! हाय!! लड़का मेरे ही अत्याचार से मर

गया। मैंने महापाप किया क्या किसी पिता ने अपने पुत्र के साथ ऐसा व्यवहार कभी किया होगा! पर अब क्या हो सकता था। घण्टों रोता पीटता रहा। क्या बाप-पना और लड़का-पना कल्पित नहीं था! यदि इसमें कुछ भी असलियत होती तो बाप बेटे को तुरन्त ही पहिचान लेता। यह संसार है। वास्तव में न कोई किसी का बाप है, न कोई किसी का बेटा है। जैसा विचारा जाता है वैसा ही फुरता है। पहिले तो वह लड़का नहीं जान पड़ा अब माँ की चिट्ठी के ध्यान दिलाने से वह लड़का हो गया। जो बात है वह केवल भ्रम मात्र है।

तू मत जाने बावरे! तेरा है सब कोय।
पिंड प्रान सों बँध रहा, सो नहिं अपना होय॥

दृष्टान्त (3)- गोमती का लड़का मर गया। वह उसके दुख से बावली बन गई। लोगों ने बहुत समझाया कि अब यह मर गया है परन्तु वह नहीं मानती थी। मरे हुए लड़के को गोद में लिये हुए हकीम वैद्य की खोज में घूम फिर रही थी। बुद्धदेव इस जगह पधारे थे। किसी ने उनके पास जाने की सलाह दी। वह पहुंची बुद्ध ने प्रेम के साथ कहा, 'यदि तू किसी ऐसे घर में राई ले आवे जिस में कोई मरा न हो तो मैं इसको जिन्दा कर सकता हूँ। वह लड़के को गोद में दबाये हुये घर घर फिरती रही। कई स्त्रियों ने राई देनी चाही परन्तु जब जब और जिस जिस से इसने पूछा कि क्या तुम्हारे घर में कोई मरा है? सबने यही कहा कि यह मृत्यु लोक है यहाँ सभी मरते हैं। वह निराश होकर एक

वृक्ष के नीचे बैठ गई। सूर्य भगवान अस्त हो गये रात को उसने सितारों को अपनी अपनी जगह छोड़ते देखा और दिन निकलते निकलते उनका कहीं चिन्ह भी न था। समझ गई यह संसार नाशवान है। काल के चक्र में सब ऐसे ही चक्कर लगाते और जन्मते मरते रहते हैं दिन निकलते ही उसने लोथ को पृथ्वी में गाड़ दिया और बुद्ध भगवान की शरण में आकर उनकी चेली बन गई।

आये हैं सो जायेंगे, राजा रंक फकीर।
एक सिंहासन चढ़ चले, यक बँधे जात जंजीत॥

चिंता ताकी कीजिये, जो अनहोनी होय।
यह मारग संसार का, नानक थिर नहिं कोय॥

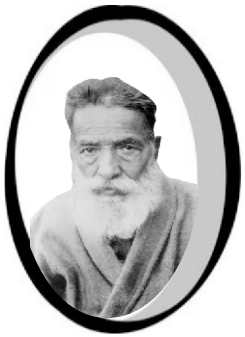

गुरुमुखता

परमसन्त परमदयाल
पं. फकीर चन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर, होशियारपुर (9.12.1979)

गुरुमुखता सब का सार है॥
गुरुमुखता कोई गुरुमुख जाने और न जाने कोई।
गुरुमुख नहीं काल मायामुख, जीवमुखी नहीं सोई॥
मायामुखता, धर्म कर्म सब, लोभ मोह के धन्धे।
रोचक दशा भयानक गतिमति, पड़े भ्रम के फन्दे॥
समय को देख मान मद बाढ़े, अहंकार चित्त ठाने।
काल निरंजन की परिछाई, अहं सुहंगं माने॥
जीवमुखी आधीन दीन है, रोवे और चिल्लावे।
बिन समझे बूझे की नीति, अस्तुति गाये सुनावे॥
यह सब यम के हाथ बिकाने, लगे न ठोर ठिकाने।
गुरु ज्ञान यथार्थ बूझे, गुरुमत को पहिचाने॥
कर सत्संग भेद सत्तमत लख, बहक न बारम्बारा।
राधास्वामी की कृपा से हो भव द्वन्द्व से पारा॥

आजकल गुरुमत बहुत जगह फैला हुआ है हर जगह, हर महकमे में गुरुमत का जोर है। दाता फ़रमाते हैं गुरुमुखता सब का सार

है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि गुरुमुखता सब का सार कैसे हुआ?:-

गुरुमुखता सब का सार है।

गुरुमुख से क्या भाव? गुरुमुख वह है जो गुरु को हमेशा अपने सामने रखे और गुरु द्वारा जो बात उस को समझ में आई है उसके अनुसार अपना अमली जीवन गुज़ारे, उसको कहते हैं गुरुमुखता। गुरुमुखता रुपये देने से नहीं आती यदि रुपया पैसा देने से गुरुमुखता आ जाती तो पैसे वाले सब तर जाते। यह रुपया देना तो केवल दुनिया का व्यवहार है और व्यवहार होना चाहिए क्योंकि बगैर लेने-देने के किसी का भी गुज़ारा नहीं हो सकता। परन्तु गुरुमुखता और मनमुखता क्या चीज़ है?

इस कलियुग में तुम देखो कितने गुरुमत हैं, हिसाब लगा लो, हज़ारों डेरे नाम देते हैं। अपनी तरफ से वो गुरुमख बनते हैं और लोगों को उपदेश देते हैं, उनमें से मैं भी एक हूँ परन्तु मैं अपनी आत्मा से प्रश्न करता हूँ कि क्या तू गुरुमुख है और अगर गुरुमुख है तो तुम्हें क्या मिला और जो गुरुमुख नहीं है उनको क्या मिला? हम क्यों गुरुमुख बनें? क्यों हम अपना सिर मुँडा कर किसी के आगे जाकर के मत्था टेकें, आखिर क्यों? मैं अपनी ज़िन्दगी देखता हूँ मैंने दाता दयाल को मालिक का रूप मानकर माना, गुरुमत तो अब समझा पिछली उम्र में जाके। वह कहते हैं कि गुरुमुखता सार है, कैसे सार है:-

गुरुमुखता कोई गुरुमुख जाने, और न जाने कोई।
गुरुमुख नहीं काल मायामुख, जीव मुखी नहीं सोई॥

वह कहते हैं कि गुरुमुखता जो है यह बड़ी चीज़ है। यह काम जो मैंने किया है किसी पर मैंने एहसान नहीं किया। मुझ को इस कबीरमत, राधास्वामीमत या नानकमत अर्थात् सन्तमत या गुरुमत की असलियत का पता नहीं लगता था कि असलियत क्या है। मैं इनकी वाणियाँ पढ़ कर रोया करता था। अब तुम सोचो तुम इससे क्या समझोगे कि गुरुमुख किसे कहते हैं, यदि रुपया देना ही गुरुमुख होता तो बड़े-बड़े पैसे वाले हैं रुपया देकर गुरुमुख हो जाते। अच्छा अगर गुरुमुख हो भी गया तो उसको मिला क्या? यह एक सवाल है जो मैं अपनी आत्मा से करता हूँ। अपनी आत्मा से पूछता हूँ बेहया! तू इतवार के इतवार, महीने के महीने सत्संग कराने बैठ जाता है तू बता तुझे इस पन्थ से क्या मिला?

इस पन्थ से मुझे यह मिला कि मैं हाय-हाय नहीं करता, दु:ख नहीं मनाता, खुश और शान्त रहने की कोशिश करता हूँ और जब तक मैं गुरुमुख रहता हूँ मुझे कोई तकलीफ़ नहीं व्यापती और जब गुरुमुखपना मेरा छूट जाता है तो मैं भी अशान्त हो जाता हूँ। इसलिए गुरुमुख क्या हुआ? इस मन की जो तकलीफें, दु:ख व मुसीबतें जिनको हम महसूस करते हैं इनको न महसूस करना गुरुमुखता है, बस यह मैंने समझा है परमार्थ में भी और स्वार्थ में भी।

गुरुमुख के मायने अपनी आत्मा से पूछता हूँ और जो मेरे साथ बीती उसके आधार पर कहता हूँ कि गुरुमुखता मुझ में रहती है तो कुछ हो जाये मैं परवाह नहीं करता। कोई मर जाये, कोई दुख पड़ जाये, घाटा पड़ जाये, जो कुछ हो मैं रोता नहीं, पीटता नहीं, हाय-हाय नहीं करता। अगर मैं भूल जाऊँ, गुरु को मुख न रखूँ तो उस वक्त मैं भी, काबू आ जाता हूँ मगर फिर समझ आ जाती है और इस काम के करने से मुझे यह फ़ायदा पहुँचा कि मैं आप अपने आप को अमल में रखने की कोशिश करता रहता हूँ। यह है बात सच्ची:-

गुरुमुख नहीं काल मायामुख, जीवमुखी नहीं सोई।

काल कहते हैं वक्त को। वक्त में हरकत होती है और जहाँ हरकत होती है वहाँ तकलीफ तो होगी ही, दुख भी होगा, सुख भी होगा। तो क्या मतलब गुरुमुख होने का और वह कब हो सकता है? सिर्फ किसी गुरु के पैर धोकर पीने से आपको यह चीज नहीं मिलेगी। फिर यह कैसे मिलेगी? अगर कोई पूरा गुरु है तो उसकी बात को सुनकर इसे सोचने, गुनने, समझने और उस पर अमल करने से तुम गुरुमुख हो सकते हो। तो फिर गुरुमुख क्या हुआ? गुरु नाम है ज्ञान का, समझ का और विवेक का। जो समझ, विवेक और ज्ञान अपने हृदय में रखकर उसके अनुसार चलता है वह गुरुमुख है। जो हर वक्त अपने अन्तर में गुरु का ध्यान रखता है वह गुरुमुख नहीं है। गुरुमुख सिर्फ वह हो सकता है जो गुरु की बात को समझकर, गुन कर उस पर

अमल करे। कोई अगर मेरे मन्दिर के दस कमरे बना दे, दस हजार रुपया दे और वह यह उम्मीद करे कि मैं गुरुमुख हो जाऊँगा, यह नहीं होगा। दूसरे शब्दों में गुरुमुख बनने के लिए गुरु की सेवा करनी पड़ती है। सन्तमत में यह केवल ज़िन्दा कामिल इन्सान की सोहबत (संगत) है। सेवा क्या है? गुरु की असली और सच्ची सेवा है, जैसे तुम बाहर से आये हो बैठे हो:-

दर्शन करे वचन पुनि सुने, सुन-सुन मन में गुने।
गुन-गुन काढ़ लये सारा, कढ़सार तस करे आहारा॥
कर आहार पुष्ट हुआ भाई, जग भव भय सब गई गवाई॥

मैंने यह समझा है गुरुमत। कई कहते हैं गुरु की सेवा करो तुमको दौलत मिल जायेगी, कोई कहता है यह हो जायेगा वह हो जायेगा, मैं नहीं मानता। यह जो कुछ किसी को मिलता है उसका अपना कर्म, अपना-अपना विश्वास और अपना यकीन होता है। मेरे पास मेरी ज़िन्दगी में कम से कम 350 औरतें आई हैं जो प्रसाद ले गईं, उनमें से चार औरतें तो ऐसी आईं, 50-50 साल की उम्र की जिनको कभी मासिक धर्म नहीं आया और यदि मुझे मालूम होता कि उनके माहवारी नहीं आती है तो मैं उनको प्रसाद ही नहीं देता। प्रसाद ले गई, उनके बच्चे हो गये और मेरे घर में यह हाल है, मेरी लड़की है मैंने उसको पचास बार प्रसाद दिया होगा। पच्चीस साल हो गये शादी किये हुए उसके बच्चा नहीं हुआ। तो अगर मैं देने वाला होता तो उसके क्यों

न हो जाता। बात यह है कि लड़की बाप पर वो विश्वास नहीं रख सकती न औरत रख सकती है, तो जितना खेल है तुम्हारे अपने ही विश्वास का है। कईयों को मैं नोटों पर हस्ताक्षर कर देता हूँ वे अमीर हो गये और कईयों को कुछ नहीं हुआ। तो अगर मेरे ही नोट पर हस्ताक्षर कर देने से कुछ बन जाता होता तो सब को फ़ायदा पहुँचता। फ़ायदा किसको पहुँचेगा? तुम्हारे अपने कर्मों के कारण, तुम्हारे अपने विश्वास की वज़ह से जो कुछ तुमने विश्वास किया हुआ है वह तुमको मिलेगा व मिला हुआ है। यह है असूल। यह जितना खेल है सब विश्वास का है।

तो गुरुमुख कौन है? गुरुमुख वह है जो विवेक, समझ और ज्ञान को अपने साथ रखता है। परमेश्वर को याद करने, नाम माला फेरने, मत्थे पर तिलक लगाने, सुरत शब्द का अभ्यास करने, ईश्वर की भक्ति, राम की भक्ति, गुरु की भक्ति से लाख सुबह से लेकर शाम तक बेशक गीता पढ़ते रहने से, कुरान-शरीफ पढ़ने या ग्रन्थ साहिब पढ़ते रहने से तुम्हारे जो दुख तकलीफ व मुसीबतें हैं यह नहीं कटेंगे। जो कर्म तुमने, मैने या किसी ने किये हुए हैं उनकी सज़ा और यज़ा से कोई बच नहीं सकता। इसलिए गुरुमुख बनना क्या है? जो मैंने समझा है। गुरु की बात को समझना कि क्या बात है। पहली बात यह है कि तुम लाख किसी ईश्वर का भजन करो, लाख किसी गुरु की टांगें दबा-दबा कर अपने शरीर से पसीना निकाल लो, जितना तुम्हारा विश्वास है, जितना तुम्हारा प्रेम सच्चा है उनके अनुसार तुमको कुछ न

कुछ मिला है और मिलेगा तो मिलेगा, किसी गुरु ने कुछ नहीं देना। यह मैं बिलकुल सच्ची बात कह रहा हूँ। यह अनुभव है।

लोगों को विश्वास होता है, मैं हूँ, मैं किसी को जानता तक नहीं होता, मेरी 'मानव मन्दिर', किताब पढ़ते हैं, मुझ पर विश्वास कर लेते हैं। उनके अन्दर मेरा रूप प्रकट होता है, उनके काम कर जाता है, दवाइयाँ बता जाता है, मरते समय ले जाता है और मेरे बाप को पता नहीं होता और मैं हैरान हूँ इन मज़हब वालों ने हमारे साथ क्या किया। पण्डितों को तो मैं मुआफ़ी दे सकता हूँ, वे यह तो नहीं कहते कि हम जाते हैं तुम्हारे अन्दर, वे वही कहते हैं न! राम जाता है भई! भगवान् जाता है भई! परन्तु हम जो राधास्वामिये या दूसरे पन्थ वाले गुरु बनकर काम करते है, उन्होंने हमारे साथ क्या किया। आश्चर्य है देखो! हमको क्या बताया गया और निकला क्या!!

तो पहली गुरुमुखता जो मैंने समझी है, सन्तों की गुरुमुखता शायद और ही मुझे नहीं पता, मैं नहीं जानता, मैंने गुरु बन कर देखा है, शिष्य बनकर देखा है। दाता दयाल से मुझे प्रेम, सहारा, हिम्मत, हौसला व उत्साह मिला परन्तु राज़ या सार भेद नहीं मिला। मैं जितना प्रेम दाता दयाल से करता था वह उतना ही मुझे बावला, नादान और बेवकूफ कहा करते थे। मैं तो दु:ख उठा कर तजुर्बे हासिल करके यहाँ तक आया हूँ, जो कुछ आज मैं कह रहा हूँ। तो गुरुमुखता से क्या भाव? पहली गुरुमुखता तो यह है कि अपनी नीयत को साफ और

अपने विश्वास को ठीक रखो और अपने कर्म को ठीक करो। जो कर्म किये हुए हैं उनका फल ज़रूर आयेगा। अगर ज्ञान है कि भई किया हुआ है, भोगते हैं तो उसका कष्ट कम उठाओगे क्योंकि समझ आ गई कि हमारा अपना ही किया हुआ है, हमारे सामने आता है और जो अपना कर्म नहीं मानते तो उनको फिर यह मानना पड़ेगा कि इस दुनिया का जो बनाने वाला या पैदा करने वाला है यह ज़ालिम है। सन्त इसको निर्दयी कहते हैं और काल कहते हैं।

दूसरे एक यह है कि यह संसार जो है हर एक आदमी के वास्ते यह Transitory अर्थात् क्षणभंगुर है अन्यथा संसार तो खबर नहीं कब से बना हुआ है। कितने द्वापर, कितने त्रेता युग बीत गये परन्तु हम यहाँ थोड़े समय के लिये आये हैं (कोई दस साल, कोई बीस, तीस, पचास, पचहत्तर, हद सौ, डेढ़ सौ साल) इस बात का हर वक्त ख़्याल रखना कि मैं यहाँ चन्द रोज़ हूँ, यह मेरा देश नहीं है, सैर करने व खेल करने के लिए आये थे या अपना कर्म भोगने आये थे, यह कर चले। एक तो मैंने यह समझा कि जिसके दिल में हर वक्त यह ख़्याल रहता है वह गुरुमुख है। गुरु नाम है ज्ञान का, तो ज्ञान सभी जानते हैं कि आखिर हमने यहाँ रहना नहीं, हमने चले जाना है। यह सच्चाई है, जो इस बात का ख़्याल रखता है वह गुरुमुख है।

गुरुमुखता की और क्या निशानी है? हम लोग शिकायत करते हैं कि अमुक ने मुझे दु:ख दिया, मेरी बहू या पुत्र दु:खदाई है,

यह हमारे अपने ही कर्मों का फल है। किसी स्त्री को पति अच्छा मिल जाता है। किसी पुरुष को स्त्री बुरी मिल जाती है, किसी का लड़का श्रवण जैसा हो जाता है, किसी का लड़का बाप को मार देता है, यह क्या है? यह हमारे कर्म हैं। ऐसा समझ कर यदि दुनिया में कोई किसी प्रकार का दु:ख, सुख आये तो यह समझ कर कि प्रकृति का खेल है या हमारा कर्म होगा, शान्ति रखना, एक यह गुरुमुखता है। मैंने जो समझा वह-वह बताता हूँ, किताबों की लिखी हुई मैं नहीं जानता। मेरे साथ जो बीती, वह मैं ब्यान करता हूँ।

हम लोग लड़के-लड़कियों के लिए चिन्ता करते हैं। Marriage are made in heaven, पिछले जन्मों के कर्मों के साथ यहाँ जिसने जिसकी बीवी बनाना है जिसने जिसका पति बनना है वह पहले ही लिखलिखा कर आया हुआ है परन्तु हम अपने कर्त्तव्य के लिए क्या कुछ नहीं करते। घर देखते हैं, पैसा देखते हैं यह देखते हैं, वह देखते हैं। अब मैं अपनी आत्मा से प्रश्न करता हूँ कि क्या नहीं देखना चाहिए? देखना चाहिए। इस शरीर और मन में जब तक इन्सान है उसको अक्ल मिली हुई है वह सोचने के लिए मजबूर है, यह प्रकृति का नियम है। जब हम जाग्रत और स्वप्न अवस्था में है हमारा मन कुछ न कुछ सोचेगा। जैसी प्रकृति, जैसी बुद्धि, जैसे हालात और वाक्यात (परिस्थितियाँ और घटनाएँ) हैं उनके अनुसार सोचने के लिए हम मजबूर हैं परन्तु गुरुमुख वह है जो अपनी अक्ल के साथ काम करता है लेकिन अगर किसी वक्त नाकामयाबी हो तो उसको

उदासी नहीं आती, चिन्ता नहीं करता, राज़ी-व-रज़ा, मालिक की मर्ज़ी पर राज़ी रहता है, जो होना था हो गया अपनी तरफ से सब ठीक है।

तीसरी एक जो असली गुरुमुखपना है वह यह है कि उस बात को करो, वह काम करो जिससे तुमको इस संसार में दोबारा जन्म न लेना पड़े। आम तौर पर आजकल ये जितने आदमी मुक्ति चाहते हैं आवागमन से बचना चाहते हैं मगर जो स्वयं सन्तान पैदा करते हैं और पौत्र, दोहित्र चाहते हैं वे मक्कार हैं, धोखेबाज हैं। वे अगर मुक्ति के लिए किसी गुरु के पास जाते हैं उनको नहीं मिलेगी, चाहे गुरु उनका कोई भी बन जाये। क्यों? क्योंकि दुनिया में फँसाने वाली और हमको यहाँ बांधे रखने वाली यदि कोई चीज़ है तो सांसारिक मोह है। सबसे पहले attachment of the world यदि कोई इस सांसारिक पदार्थ की है। यह चाहे कि मैं इस दुनिया में न जाऊँ तो वह किसी भी सांसारिक पदार्थ से अपना मोह न रखें परन्तु जितने आदमी मेरे पास आते हैं, मैं जानता हूँ एक या दो आदमी कोई शायद ही इस बात के लिए आता होगा, बाकी तो सब दुनिया के झगड़ों के लिए आते हैं। मुसीबतें बनी हुई हैं, घर के दु:ख बने हुए हैं, यह समझकर कि शायद वहाँ बाबा के पास जायेंगे तो शान्ति मिल जायेगी इसलिए आते हैं। मगर जो आवागमन से बचने या मुक्ति के लिए आते भी हैं वे अमल नहीं करते। वह अमल क्या हैं? तुम ज़िन्दगी में सारी ज़िन्दगी तप करते रहो, नाम जपते रहो, ध्यान करते रहो, आवागमन तुम्हारा नहीं

जाता, जब तक तुम्हारा मोह दुनिया के किसी भी स्थूल पदार्थ से है तब तक तुम किसी सूरत से पार नहीं जा सकते चाहे किसी भी बड़े से बड़े गुरु को गुरु बना लो। क्यों? सब सन्त और सनातन धर्म यही कह गये परन्तु आजकल तो साईन्स ने भी यही सिद्ध किया है कि मोह होने से सूक्ष्म शरीर भारी होगा इसलिए जमीन की कशिश (Gravity of Earth) उस को अपनी तरफ खींचेगी और अपने दायरे से ऊपर जाने नहीं देगी। मैंने अभ्यास किया है, रूह तो भारी है ही नहीं। रूह, सुरत या मालिक का जो रूप है वह तो फूल की खुशबू के वजन से भी कम है। यही कबीर साहिब ने भी कहा है। परन्तु चूंकि उसका किसी स्थूल देह, पुत्र, औरत, जायदाद, भाई या गुरु, गुरु के आश्रम या राम, कृष्ण इत्यादि किसी से भी प्रेम व प्यार होता है, तो जो आदमी इनका ध्यान करते हुए मरते हैं उनका सूक्ष्म शरीर जब निकलेगा वह भारा होगा और वह किसी सूरत में पार जा ही नहीं सकते चाहे लाख शब्द अभ्यास करें, लाख जो मर्ज़ी कर लें या कोई भी गुरु उनको लेने के लिए क्यों न आ जाये। हालाँकि असलियत यह है कि कोई भी गुरु किसी को लेने नहीं आता बल्कि जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसा ख्याल या impression बैठा हुआ है। मुझे इसलिए इसका तजुर्बा है कि मेरा रूप मरने वालों को लेने के लिए जाता है मगर मुझे कोई पता नहीं होता। यह मैं कसम से कहता हूँ, मुझे कुष्ठ पड़े अगर मैं झूठ बोलूँ और यही हाल सब गुरुओं व महात्माओं का है जिन्होंने यह जो प्रोपेगैण्डा किया है कि नाम ले जाओ, अन्त समय गुरु तुमको

सत्तलोक ले जायेगा। ले तो गुरु ही जायेगा, इसको मैं जानता हूँ, गुरु नाम है ज्ञान का मगर वे ज्ञान की तरफ तो आते नहीं, वे तो आदमी के जिस्म की तरफ जाते हैं अगर ज्ञान को गुरु माने तो जरूर ले जायेगा। और किसी बाहरी गुरु की शक्ल को मानते और रूप को ही हर समय अपने सामने रखते हो तो किसी सूरत में नहीं आ सकते क्योंकि वे द्वैत में है इसलिए गुमराह हैं और भूले हुए हैं। बहरेहाल सारांश यह है कि अगर कोई इन्सान हमेशा के लिए इस दुनिया से पार जाना चाहता है कि फिर न जन्म ले तो उसको अपनी जिन्दगी में मरने से पहले किसी भी किस्म के स्थूल पदार्थ (Grass Matter) से प्रेम नहीं करना चाहिए, न फ़कीर चन्द से, न राम से, न कृष्ण से, न किसी से, सिवाय प्रकाश के और शब्द के, यही सन्तों का असली मार्ग है। लोग प्रकाश और शब्द को तो छोड़ गये और गुरु के चेहरे को ही देखते रहे यद्यपि शुरु-शुरु में चेहरा लाज़मी है। इस वास्ते मैं गुरुमुख किसको गिनता हूँ? जिसको यह ज्ञान हो जाये और वह अपनी ज़िन्दगी में किसी स्थूल वस्तु से मुहब्बत न रखे। प्रेम करे, मोह नहीं रखे, प्रेम फँसाता नहीं, मोह फँसाता है। आप लोग आते हैं मैं सब से प्रेम करता हूँ। मुझे कोई दुख है? कुछ नहीं! आप आते हैं आप से हँसता हूँ, खेलता हूँ। आप चले जाओगे मैं आप को भूल जाता हूँ कि आप कौन हैं और कहाँ से आये हैं। तो यह है गुरुमुख की पहचान जो मैंने समझी। खबर नहीं मैंने जो समझी वह ग़लत है, खबर नहीं वह ठीक है। दुनिया ने तो गुरुमुख यह समझ लिया कि जिसने दुनिया की सेवा कर दी या कुछ

कर दिया, यह जो सांसारिक सेवा है यह उन आदमियों के लिए है जिनके बच्चों जैसे दिमाग हैं, यह गुरुमुख बनाने की सिखलाई के लिए प्रारम्भिक सेवा जरूर है। दाता दयाल पहली बार हजूर महाराज के पास गये वहाँ रिवाज था, पैसा, मिठाई, कपडा या कुछ ले जाते थे, यह भी लेकर गये। राय साहिब ने दाता दयाल को कहा 'शिवव्रत लाल! यह काम तेरे वास्ते नहीं है, तू न लाया कर यह भेंट।' यह जिस तरह बच्चे छोटे हैं, उनको समझ नहीं होती वे जो कुछ समझते हैं वह माँ या बाप को समझते हैं। दुख हो सुख हो, रोता हो, कुछ भी हो माँ मारेगी भी फिर भी माँ की गोद में दौड़ेगा तो जिनकी बुद्धि इस प्रकार की है उनको जरूर देना चाहिए ताकि एक जगह तुम्हारा विश्वास बैठ जाय। मैंने बहुतेरा दिया है जिन्दगी में:-

मायामुखता धर्म कर्म सब लोभ के धन्धे।

जो इन चीज़ों की इच्छा रखता है, इन चीज़ों से प्रेम रखता है, वह मनमुख है:-

रोचक दशा भयानक गति मति पड़े भ्रम के फन्दे।

आजकल तो गुरु वह मशहूर है जिसके प्रसाद से किसी को पुत्र हो गया। हालाँकि मैं कसम से कहता हूँ कि यह सब उनके अपने विश्वास ही का चमत्कार होता है जैसा कि मैं प हले आपको अपना अनुभव ब्यान कर चुका हूँ।

तो मेरे कहने का मतलब यह है कि आज जो यह शब्द

निकला था तो मेरे अन्तर में ख्याल हुआ, फकीर चन्द। लोगों को मत बताता है तू, बता तू गुरुमुख है, है तो बता? गुरुमुख बनने के लिए जो कुछ मैंने बताया है यह अपने ऊपर घटाया है और अपने अनुभव के अनुसार ब्यान किया है। इसके लिए एक बात यह है कि इश्केमिज़ाजी के बिना इश्के हकीकी नहीं आती, याद रखना मेरी बात को। दुनिया ने इश्के मिज़ाजी से भाव केवल औरत का इश्क समझा हुआ है। आम तौर पर लोग केवल यही अर्थ इश्के मिज़ाजी का लेते हैं जो गलत है। कोई माँ का सच्चा भक्त, कोई बाप का सच्चा खिदमतगुजार, कोई भाई का सच्चा खिदमतगुजार कोई देश का सच्चा खिदमतगुजार और कोई गुरु के हुक्म को मानने वाला ये इश्के मिजाजी की ही सूरते हैं। कुदरत की किसी भी स्थूल वस्तु के साथ सच्चाई के साथ प्रेम करना और अपने आप की कुरबानी देना यह है इश्के मजाजी। यह जब कोई करता है तो तभी उसका मन कुरबानी देता है, वह एकाग्र हो कर एक तरफ लड़ता है और अपने वक्त, अपने पैसे और अपनी तवज्जह की कुरबानी देता है। मेरी सफलता का राज है इश्के मिजाजी, ज्ञान तो मुझे बाद में सत्संगियों के तजुर्बों से मिला और तब मुझे सच्चाई की समझ आई।

और देखो! तुम रात को सो जाते हो, स्वप्न आता है, स्वप्न में तुम जड़ जाते हो तो तुम्हारी जुबान लड़खड़ाती है। स्वप्न में तुम किसी को मुक्का मारते हो तो तुम्हारा हाथ हिल जाता है। औरतों का मुझे पता नहीं, तुम हो, ख्याली औरत अपने अन्दर बना लेते हो तुम्हारा वीर्यपात

हो जाता है। वह जो ख्याल तुमने अपने दिल से स्वप्न में किया है वह आपने स्वयं नहीं किया, जो दिमाग पर संस्कार थे वे तुम्हारे सामने आये अर्थात् आपकी नीयत नहीं है तो इस दुनिया में जागते हुए हमारी किसी के साथ दुश्मनी है, किसी के साथ हमारा झगड़ा है, किसी के साथ कुछ है, द्रोह है, चारसौबीस है क्या वे ख्यालात जो जाग्रत के हैं यह असर न करेंगे? इस वास्ते गुरुमुखता यह है कि जागते हुए जहाँ तक हो सके अपनी निजी गरज़ के लिए किसी के साथ दुश्मनी, झगड़ा, धोखा, फरेब व चारसौबीस कोई चीज़ न हो बल्कि हमेशा अपने संस्कारों को शुद्ध रखने, मन, वचन, कर्म से शुद्ध रहने और शुद्ध व ऊँचे संस्कार मजबूत करने को पूरा ध्यान दो क्योंकि ये संस्कार मजबूर करते हैं कर्म कराने के लिए। यह है गुरुमुखता। मैंने जो कुछ अपनी जिन्दगी में अमली पहलू से स्वयं आज़माया है वह कहता हूँ।

फिर, शुरु में जिसको समझ नहीं होता गुरु जो सयाना होता है वह खास हुक्म देता है किसी को, जैसे दाता दयाल ने मेरे छोटे भाई का नाम देकर हुक्म दिया था। आजकल तो जो जाता है उसको नाम दे देते हैं। मेरे गुरु महाराज जी यह नहीं करते थे। मेरा छोटा भाई छटी कक्षा में पढ़ता था, मुझे देखकर डर से भाग कर दाता के पास नाम लेने चला गया। दाता दयाल ने नाम दे दिया और कहा कि एक शर्त पर नाम देता हूँ कि मेरा कहा मानो। जी हाँ! मानूंगा!! अच्छा। नाम बता दिया फिर कहा कि जिन्दगी में जब तक सर्विस में हो नाम तुमने जपना नहीं। सर्विस के बाद पिछली उम्र में मेरी गोद में आ जाओगे। फिर मैं करूँ

क्या? तेरे वास्ते हैं 'Work means life and life means work' अर्थात् जिन्दगी के मायने काम और काम के मायने जिन्दगी और हाथ किसी को देने के लिए बढ़ाना, लेने के लिए नहीं पसारना यही मेरा हुक्म है। मैं किसी नौजवान बच्चे को जो मेरे पास आता है गलत नाम की तरफ हौसला नहीं देता बल्कि उसको चरित्र निर्माण बताता हूँ। नाम का अधिकारी राधास्वामीमत की किताबों के अनुसार कौन है:-

विषयों से जो होय उदासा, परमारथ की जा मन आसा।
धन सन्तान प्रीत नहिं जाके, खोजत फिरे साध गुरु जागे॥

आप ही सोचो इस बात को कि आजकल तो दस-दस, बारह-बारह, पन्द्रह-पन्द्रह साल के बच्चों को नाम दे दिया जाता है। उन्होंने तो गृहस्थ भोगना है, उन्होंने तो नौकरी करनी है, उन्होंने अपनी दुनिया के काम करने हैं, उनको नाम देकर उनकी जिन्दगियों को तबाह किया गया। मैं यह बात बड़ी निड़रता से कहता हूँ कि आम तौर पर आजकल का गुरुइज्म एक महाठगइज्म है। अपने मान, अपनी दौलत, अपने आश्रम और अपने डेरों के लिए सारा काम किया जाता है।

सबसे जरूरी चीज़ हम गृहस्थियों के लिए यह है कि बच्चों का चालचलन ठीक बनाओ जैसी बुनियाद रखोगे वैसे होंगे। आजकल हम लोगों ने औरतों को अपना एक विषय का औजार समझा हुआ है। औरतें सन्तान पैदा करने के लिए होती हैं। कौन जाता

है सन्तान पैदा करने के लिए, औरत के पास स्वाद के लिये जाते हैं, फिर वह जो Uncalled for Children अर्थात् बिन बुलाये बच्चे पैदा होते हैं उनसे यह उम्मीद रखना कि ये अपने लिए या देश के लिए या मां-बाप के लिए कोई अच्छा काम कर जायेंगे हरगिज़ नहीं करेंगे। शराब पी हुई है आदमी ने, घर चला गया, विषय भोग गया बच्चा पेट में आ गया, उस लड़के पर क्या असर होगा?

आजकल निन्यानवे प्रतशित बच्चे स्कूलों में शादी से पहले खराब हो जाते हैं। कोई किस्मत वाला ही बचता है, कोई न कोई खराबी उनमें आ जाती है। उसका कारण क्या है? बच्चा चौथे महीने पेट में आ जाता है, जान पड़ जाती है। शास्त्र यह कहते हैं कि जब तक बच्चा मां का दूध न छोड़ दे उस समय तक माँ-बाप, पति-पत्नी की हैसियत में आपस में मिल नहीं सकते क्योंकि उसका प्रभाव बच्चे पर जायेगा। माँ दूध पिला रही है, सास से लड़ी हुई है, दिल तो उसका हर वक्त कुढ़ता है, कुढ़ रहा है, बच्चा दूध पी रहा है वह असर बच्चे में जायेगा, बच्चा बीमार होगा, बच्चों की आदतें खराब होंगी।

मैं जहाँ रूहानियत बताता हूँ मैं जानता हूँ कि आप लोग सभी रूहानियत के अधिकारी नहीं हैं, आप लोग तो दुनिया चाहते हैं। सुनो! बच्चों को बच्चों के ख्याल से पैदा करो। यह नहीं कि मैंने नहीं पैदा किये, चार बच्चे मेरे भी बिन बुलाये आये मगर मालिक ने मुझ पर इतनी बड़ी दया की कि चारों मर गये। उस समय मुझे इन बातों का

पता नहीं था। मैंने अच्छी सन्तान के विचार से एक लड़का पैदा किया। आप हैरान होंगे पौने तीन हजार रुपया वेतन लेता है, बहुत आज्ञाकारी है। मेरी रिक्शा है। मेरा रिक्शा वाला कहता है बाबू जी, चलिये इस पर तो कहता है पिता जी की रिक्शे है मैं नहीं जाता। खाना मेज़ पर खा लेता है नौकर मेरा जाता है वह थाली उठाना चाहता है तो कहता है, नहीं भाई! आप पिता जी के आदमी हैं आप मेरे झूठे बर्तनों को हाथ मत लगाओ अर्थात् इतना वह शरीफ़ है। भिलाई के कारखाने में छः भट्ठियों जहाँ से लोहा निकलता है, उनका इन्चार्ज है। तो मैंने यह आज़माया हुआ है कि जैसा ख्याल वैसा हाल। मेरा पहला बच्चा जो पैदा हुआ उस समय मैं मज़हबी दुनिया का आदमी था। मैं कहता था ऐसा बच्चा हो जो न कामी हो, न क्रोधी हो, न लोभी हो, न मानी हो। वह लड़की पैदा हुई, पैंसठ साल की हो गई है, मेरे घर में रहती है। काम उसने नहीं भोगा, लोभ उसके नहीं है। भाई आता है या मैं जाता हूँ, पैसे ले लो तो कहती है नहीं मेरे घर बड़े पैसे हैं, मुझे नहीं चाहिए। कपड़ा अच्छा वह नहीं पहनती। माँ मर गई, अपने रिश्तेदार आयें तो खड़ी होके पिट्ट लेवे परन्तु जिस बेले सत्संगी जायें तो नहीं। सुरतो! हुन क्यों नहीं रोंदी? लेह! माँवां सारियां दियां मरदीं रहदींऐं, जे अपना कोई आबे शरीक, तां तो पिट्टना पैंदा है सत्संगियों वास्ते कौन रोंदा है। तो उसके लिए यह है कि औलाद को औलाद के ख्याल से पैदा करो बस! एक तो नुक्ता यह है।

अगर अभिमन्यु माँ के पेट में रहता हुआ जब अर्जुन उससे

चक्रव्यूह बेधने का जिक्र कर रहा था तो उसे सुनकर उस संस्कार से जो उसने माँ से लिया था चक्रव्यूह वेध सकता था तो जो संस्कार माँ रखती है वह कहाँ जायेगा! जरूर असर करेगा। इसलिए राष्ट्र के बनाने वाले लीडर नहीं है औरतें हैं, माँऐं हैं, हमारी माताएं हैं। यह है लाजमी बात तुम गृहस्थियों! तुमको बताये देता हूँ, लड़के-लड़कियों के चालचलन का ख्याल रखो परन्तु यह तो तुम तब ठीक रख सकते हो जब तुम खुद भी बाअमल हो। जब तुम खुद बाअमल नहीं हो तो तुम क्या कर सकते हो:-

यह सब यम के हाथ बिकाने, लगे न ठौर ठिकाने।
गुरुमुख ज्ञान यथार्थ बूझे, गुरुमत को पहिचाने॥

वह कहते हैं कि गुरुमत को समझ-बूझ वाला ही आदमी अनुसरण (Follow) करता है वरना अज्ञान की भक्ति करने वाले बहुत हैं। अज्ञान की भक्ति से प्रेम आ जायेगा, जिन्दगी में बहुत आनन्द मिलेगा मगर यह गुरुमुखता नहीं है:-

कर सत्संग भेद सन्तमत लख, बहक न बारम्बारा।
राधास्वामी की कृपा से, हो भव द्वन्द्व से पारा॥

वह कहते हैं कि अगर भव से अलग होना चाहते हो तो किसी गुरु की पूजा करो। राधास्वामियों ने राधास्वामीमत चलाना था इस कारण उन्होंने राधास्वामी लफ्ज़ का प्रयोग कर दिया। असली चीज़ है सुरत और शब्द या पारब्रह्म और शब्दब्रह्म, एक ही बात है। गरुड़पुराण

में पढ़ो। मैंने गरुड़पुराण की व्याख्या की है, गायत्री मन्त्र पढ़ो- अजपाजाप, गुरु का ध्यान और पारब्रह्म और शब्दब्रह्म, जब तक यहाँ नहीं जाओगे तुम्हारा आवागमन नहीं छूटेगा। आवागमन इस दुनिया या इस ग्लोब का तो तब छूटेगा जब स्थूल माद्दे से प्रेम नहीं हो। अगर स्थूल माद्दे से निकले तो नेकी व परोपकार करने वाले जो हैं वे दूसरे लोकों व कुर्रों में जन्म लेंगे। अगर बिलकुल ही बचना चाहते हो तो वह और रास्ता है, यहाँ गुरु भी नहीं रहता। लोग गुरु-गुरु करते हैं, स्वामी जी कहते हैं जहाँ हमने जाना है, जो मंज़िलें मक़सूद है वहाँ न गुरु है, न चेला है, न सत्तनाम है, न नाम है, न अनामी है। यह असली गुरुमुखता है। ऐसा व्यक्ति बच्चे की तरह रहता है, दिल में फ़िक्र, चिन्ता, वहम, भ्रम वह कुछ नहीं करता। तो मैं इस नतीज़े पर आया, मैं कौन हूँ:-

लब खुले और बन्द हुए, यह मेरी ज़िन्दगाना है।

कई महात्मा कहते हैं हम अनामी हो गये या हम सत्तलोक में चले गये, बहुत अच्छा। अरे भई! तुम अनामी हो गये तो तुम्हारे पर जो मुसीबतें आईं तुम इनको दूर नहीं कर सके तो हम क्या मानें कि तुम अनामीधाम में पहुँचे? अगर तुम पहुँच गये तो अपनी बीमारी ही दूर कर लेते! मैं खुद कई बार ऊपर जाता हूँ तो जब मेरे कर्मों के अनुसार मेरे पेट में दर्द होनी होती है चाहे मैं लाख अनामीधाम में जाऊँ चाहे सत्तलोक में जाऊँ। इन बड़े-बड़े मशहूर महात्माओं का क्या हाल

हुआ, सिक्खों के गुरुओं के साथ क्या बीती!

दुनिया ने गुरुमत को समझा नहीं। गुरु की पूजा है उसकी बात को सुनना, समझना और उस पर अमल करना। बाकी दुनिया की इज्जत है और एहसान है, जैसे हम बड़े होकर माताओं की इज्ज़त करते हैं। जब गुरुमत की समझ लग जाती है फिर न गुरु रहता है, न चेला रहता है, न राम है, न स्वामी है, न सेवक है, न कुछ।

मैंने तो यह समझा है मेरी अगर तसल्ली हुई कुछ, तो मुझे तो यह पता लगा कि मेरी जिन्दगी एक चेतन का बुलबुला है। वह जो कादिर है, एक ताकत है, कोई उसको अनामी कह देता है, कोई राम कह देता है, कोई कुछ उसकी महिमा का मुझे तो पता लगा नहीं भई! और मैं बड़े हौसले से कहूंगा कि मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूँ जैसे कि सभी ने उसे बेअन्त कह दिया।

आप लोग आये है मैं एक बड़ी भारी जिम्मेवारी को महसूस करता हूँ। सब जगह एक आन्तरिक घेरा है, एक बाहरी घेरा है, मेरे यहाँ यह बात नहीं है। आप लोग आये हैं, जिस-जिस कामना को लेकर आये हैं आपकी कामना पूर्ण हो बस मैं यही कुछ कर सकता हूँ और न मैं मरते समय किसी की सुरत को ले जाता हूँ न कुछ बल्कि सत्संगी ले गये मुझे- सत्संगियों से मुझ मन के रूप का पता लग गया तब मैं मन को छोड़ गया इसमें फँसता नहीं, न! मैं अपने आप से पूछता हूँ तू गुरुमुख है? अगर गुरुमुख है तो गुरुमुखता को तुमने क्या

समझा ? यह समझा कि हमारे मन का ज्ञान और अनुभव यह गुरु है। बाहर का गुरु अनुभव और ज्ञान देता है उस अनुभव का पकड़ना यह जिज्ञासु का अपना काम है। नानक साहिब ने कहा है:-

सदा रहे हर नाले।

गुरु नाम है ज्ञान का, समझ का, इसको मुख्य रखो हर वक्त कि यह काम करना कि नहीं करना! बस!! बाहर के गुरु की केवल इज्जत रहती है कि बात समझ में आ जाय। दाता दयाल थे उनका भाई जूआ खेलता था वह उसके जूए की आदत को न हटा सके और हम लोग जाते हैं मुक्ति हासिल करने के लिए। तो जितना खेल है मन का है! बस इस मन को सम्भालना है। अपने मन की सफ़ाई का ख्याल रखो। तो आज शब्द निकला था गुरुमुख और मनमुख। मेरी नीयत साफ़ है, मैंने अपनी जाती गरज के लिए कोई काम नहीं किया। I want to be true to my ownself, जो मैंने खुद आजमाया है मैंने वह कहा है। आप लोग न समझें तो न समझें क्योंकि तुम लोग तो आते ही दुनिया की जरूरतों के लिए।

राधास्वामी

सत्संग

परमसन्त परमदयाल
पं. फकीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर, होशियारपुर (11,1,1981)

धन्य धन्य गुरु परम सनेही, धन्य दीन हितकारी।
धन्य कृपाला सहज दयाला, भव भय मेटनहारी॥
लीला अगम अपार अमाया, अद्‌भुत कथा कोई जाने।
ऋषि मुनि जोगी पार न पावें, ज्ञानी नहीं पहचानें॥
अगुण सगुण के मध्य विराजें, नहीं ब्रह्म नहीं माया।
रूप अरूप करे वरे परे तुम, नहीं प्रकाश नहीं छाया॥
सब में व्याप्त तुम्हारी सत्ता, सत्त असत्त के पारा।
मन वाणी की गम नहीं तुममें, सब में सब से न्यारा॥
क्या कह करूँ तुम्हारी स्तुति, अजर अमर अविनासी।
निरालम्ब सब के आधारा, चेतन धन सुख रासी॥
गो गोचर जहाँ लग मन जाई, सो नहीं देश तुम्हारा।
माया काल के परे ठिकाना, क्या कोई बरने पारा॥
तत्त्व अतत्त्व असार सार नहीं, शब्द सुरत नहीं होई।
सन्त कहें तुम शब्द रूप हो, और अशब्द गति सोई॥
ऊँची दृष्टि करे जो प्रानी, सार भेद कुछ पावे।

भेद पाय शरणागत आवे, आवागवन मिटावे॥
दया करो करुणा चित लाओ, दो मोहि भक्ति विवेका।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, रहूँ शब्द मिल एका॥

सन्तो! देखो जग बौराना॥
नेमी देखे धर्मी देखे, करें प्रात अस्नाना।
बहुत ही देखे पीर औलिया, पढ़ते वेद पुराना॥
घर घर मन्त्र देत फिरत हैं, महिमा के अभिमाना।
गुरु समेत शिष्य सब डूबे, अन्त काल पछिताना॥
हिन्दू कहे मोहे राम प्यारा, तुरक कहे रहमाना।
आपस में द्वौ लड़ लड़ मूअे मरम न काहू जाना॥
कहें कबीर सुनो भाई साधो, यह जग भरम भुलाना।
कतेक कहूँ कहा नहीं माने आप ही आप बंधाना॥

राधास्वामी!

दिमागी हालत ऐसी हो गई कि अब बोलने-चालने, सत्संग कराने को जी नहीं चाहता। क्यों? दौड़-दौड़ के थक गया, बात समझ में आ गई, शान्ति मिल गई। आज यह शब्द निकला, कबीर साहिब कहते हैं सारी दुनिया पागल हो गई। सोचता हूँ क्या कबीर साहिब ने ठीक कहा? हाँ! ठीक कहा। कैसे ठीक कहा? हम किसी चीज़ को हासिल करने के लिए कितनी मेहनत करते हैं, कई बार सफल हो

जाते हैं कई बार नहीं भी सफल होते और हम मेहनत करते रहते हैं। तो अनुभव ने क्या बताया? कि जो कुछ किसी ने कर्म किये हुए हैं जो कुछ तुम ने दिया हुआ है और जो कुछ तुमने किया हुआ है तुमको उसका फल मिलना है। लाख तुम कोशिश करो कि उससे ज्यादा तुमको मिल जाये या उससे कम मिल जाये यह नहीं मिलेगा। एक तो मैं बौरापन यह समझता हूँ। आदमी को क्या चाहिए? जो कुछ तुम चाहते हो वो दो। दौलत चाहते हो दौलत दो, मान चाहते हो तो तुम दूसरों की इज्जत करो। तुम चाहते हो तुम्हारी कोई मदद करे तो तुम दूसरों की मदद करो। एक तो बौराना यह है। मैं जो समझा वह कहता हूँ। खबर नहीं कबीर साहिब का क्या मतलब है, जग कैसे बौरा गया यह मुझे नहीं पता, मैं नहीं जानता, कबीर साहिब की बात कबीर साहिब को पता होगी:-

सन्तो! देखो जग बौराना!!
नेमी देखे धर्मी देखे, करें प्रात अस्नाना।
बहुत ही देखे पीर औलिया, पढ़ते वेद पुराना॥

अब कबीर साहिब को पता होगा कि उन्होंने जग बौराना कैसे कहा? मेरी समझ में यह आया है कि हम शान्ति चाहते हैं, शान्ति को हासिल करने के लिए जो कुछ भी हम बाहर तरद्दुद, अनेक प्रकार के उपाय और यत्न करते हैं वह तरद्दद से नहीं मिलती है। दरअसल शान्ति हमारे पास है, हमारे अपने अन्तर में है, हमारे मन में है। जो

शख़्श अपने मन को साध लेता है उसको फायदा होता है।

परसों-चौथ मेरे पास एक पत्र आया। एक व्यक्ति मुझको लिखता है कि आप में सब गुण हैं परन्तु आप अहंकारी हैं, उसने यह मुझको लिखा। मैं जानता हूँ कि उसने यह पत्र क्यों लिखा। वह व्यक्ति यहाँ आया था बी.ए. पढ़ा हुआ है, आवारा था। दो महीने यहाँ मेरे पास रहा, मेरी बड़ी सेवा की। यहाँ मन्दिर में वह कहीं गया एक औरत बैठी थी, उसने उसको गुस्ताख़ी के लफ्ज़ पेश किये (असभ्य शब्द मुँह से निकाले) हमारे आदमी ने कहा इसको निकाल दो, वह चला गया। मैं यह समझ के कि वह दुखिया है, मूर्ख है, शादी-शुदा था, दो बच्चे थे उसके, मन्दिर से उसकी औरत को पच्चीस रुपये मासिक दो वर्ष भेजता रहा। फिर वह किसी डेरे में गया, वहाँ से मुझको लिखता है बाबा जी! यहाँ एक बड़ी सुन्दर लड़की है, मैं उसके साथ शादी करना चाहता हूँ। आप वहाँ का जो आचार्य है उसको सिफारिश कर दो मेरी शादी हो जाये और फिर वह यहाँ आया मैंने उसको आने नहीं दिया। फिर उसने वहाँ से पत्र लिखा कि आप अहंकारी हैं, मेरी पत्नी को जो पैसा भेजते हो बन्द कर दो। उसने अहंकारी इस वास्ते लिखा।

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ क्यों फ़कीर चन्द! तू अहंकारी है? पहला प्रश्न तो यह है कि अहंकार कहते किसको हैं? अहम् और कार। अहम् अर्थात् मैं, कार अर्थात् निशान। संस्कृत में जब दो शब्द इकट्ठे होते हैं 'म्' अक्षर 'न्' में बदल जाता है। इसलिए

उसको अहम्कार न कह कर अहंकार कह देते हैं। हमारे मन या हमारी अपनी तवज्जह का किसी दूसरी चीज़ के साथ जुड़ जाना, जोड़ना और उसको अपना समझना ही अहंकार है और कोई अहंकार नहीं। हम सोचते हैं कि यह शरीर हमारा है, यह दौलत हमारी है, पत्नी हमारी है, पिता मज़हब और गुरु हमारा है जब तक हम यह सोचते रहते हैं हम अहंकार में हैं। तो जो आदमी इस दुनिया में शरीरधारी है वह किसी सूरत में भी अहंकार से बच सकता ही नहीं। इस ख़्याल से मैं अहंकारी हूँ, मैं ही नहीं तमाम दुनिया, तमाम संसार अहंकारी है। आप सोच लो मेरी बात को मैंने क्या कहा! अहंकार, अहम्कार, अपना निशान, हम अपने आप को किसी न किसी ख़्याल के साथ या इष्ट के साथ जोड़कर उसको अपना समझ लेते हैं। तो जब तक हम किसी चीज़ को अपना समझेंगे वह अहंकार है, परन्तु अहंकार से तो बच नहीं सकते, यदि अहंकार के रूप का हम को पता लग जाये तो जब तक हमारा जीवन है हम अपनी जरूरतों के लिए दूसरों के साथ जुड़ें और अगर किसी समय वह चीज़ न रहे क्योंकि जिसके साथ हम जोड़गे वह टूटेगी, जहाँ जोड़ी तहाँ तोड़ी। तो जब वह टूट जाय तो फिर अफ़सोस न करे आदमी। यही सन्तमत का एक सार है, मास्टर जी! समझ गये मेरी बात को मैंने क्या कहा है आपको!!

अहंकार के बिना दुनिया में हमारा गुज़ारा नहीं है, कहाँ जाओगे। केवल इसके रूप को समझ लो। क्योंकि जिस जगह हम

अपने ख्याल को जोड़ते हैं पुत्र के साथ, दौलत के साथ, गुरु के साथ, खुदा के साथ, किसी के साथ भी जोड़ते हैं वह तो हम अपना ही निशाना बना लेते हैं परन्तु वह चीज तो हमेशा रहेगी नहीं, (रहेगी तो तुम्हारी ज़ात हमेशा रहेगी, तुम क़ायम रहोगे) जहाँ तुम जोड़ते हो वह तो जुड़ेगी नहीं, वह टूट जाएगी। तो जब वह टूटे उस समय यदि इस बात का ज्ञान है तो वह दु:ख नहीं मनायेगा। दौलत है, enjoy करो, कल को यदि चली जाये तो फिर हाय-हाय न करो क्योंकि जो चीज़ पैदा हुई है, जिसके साथ तुमने अपने आप को लगाया है वह तो एक वक्त जायेगी! इसलिए कबीर साहिब कहते हैं कि सम्पूर्ण जगत् बौराना है:-

सन्तो! देखो जग बौराना।

नेमी देखे धर्मी देखे करें प्रात अस्नाना॥

और वह नेम, धर्म जो कहते हैं अहंकार से कहते हैं:-

बहुत ही देखे पीर औलिया पढ़ते वेद पुराना।

घर घर मन्त्र देत फिरत हैं महिमा के अभिमाना॥

आप देख लो! हम लोग दूसरों को जाकर उपदेश देते हैं, आजकल गुरु जब बाहर जाते हैं तो लाऊडस्पीकर से नामदान का ढिंढोरा पिटाते हैं कि फलाँ दिन नाम दान मिलेगा। वह जो आदमी यह सोचता है कि मैं गुरु बनके किसी को नाम दे रहा हूँ वह अभिमानी है, वह अहंकारी है:-

गुरु समेत शिष्य सब डूबे, अन्त काल पछिताना.

देखो! क्या कहते हैं। तभी तो मैं कहता हूँ कि मैं यदि उठा हूँ तो केवल इस वर्तमान गुरुइज्म का सुधार करने के लिए उठा हूँ। हम लोगों को जबर्दस्ती नाम दिया जाता है, जबर्दस्ती। क्यों? अपने मान, अपनी इज्जत और अपनी दौलत के लिए, यह देख लो। तो करना क्या चाहिए? मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ, कि फ़कीर चन्द! सारी ज़िन्दगी गुज़र गई तुझे क्या मिला, बता? मुझे यह मिला कि मेरे वहम चले गये, न तो मैं अब किसी गुरु को पूजता हूँ, न मैं रब्ब को पूजता हूँ, न किसी को पूजता हूँ, मुझको समझ आ गई कि मैं हूँ कौन। मैं चेतन का एक बुलबुला हूँ, जिस तरह पानी में बुलबुला पैदा होता है, वह अपने आप टूट जाता है। न तो मुझे ख्याल रह गया राम का, न कृष्ण का, न गुरु का, न किसी का। हो क्या गया? मेरी समझ में आ गया कि मैं हूँ ही नहीं। एक दिमाग़ी हालत पैदा होती है, उसमें 'मैं' आई हुई है 'मैं' ने सारा जीवन खराब किया। 'मैं' बनके मैं शिष्य बना, 'मैं' बनके पिता बना, पुत्र बना, अफसर बना, मातहत बना, वो झगड़े खत्म हो गये। अब चूँकि झगड़े खत्म हो गये, काम करने को जी नहीं करता। परन्तु मुश्किल यह है कि वह जो पिछला कर्म है मेरे गले पड़ा हुआ है वह मुझे घसीटे लिए जाता है। तो आज यह शब्द पढ़ा गया:-

सन्तो! देखो जग बौराना॥

नेमी देखे धर्मी देखे करें प्रात अस्नाना।

बहुत ही देखे पीर औलिया पढ़ते वेद पुराना॥

अब मैं सोचता हूँ कि कबीर साहिब ने यह क्या कहा, क्या हम वेद, पुराण न पढ़ें? नहीं! आखिर हम वेद पढ़ते हैं, किसलिए पढ़ते हैं? हम अभ्यास करते हैं, किसलिए करते हैं? हम कोई काम करते हैं, किसलिए करते हैं।? यदि उस काम के करने का जो उद्देश्य है वह हमको नहीं मिलता तो फिर हम जो कुछ करते हैं उसका क्या लाभ? हमने गुरु धारण किया, किसलिए किया? शान्ति के लिए किया। अगर शान्ति नहीं मिलती तो गुरु धारण करने से क्या लाभ? ठीक है कि नहीं, झूठ तो कोई है नहीं:-

घर घर मन्त्र देत फिरत है महिमा के अभिमाना।

अब देखो। कहाँ यह सन्तमत कबीर साहिब का और कहाँ आजकल का गुरुमत! जबर्दस्ती नाम देते हैं, जबर्दस्ती। और कबीर साहिब क्या कह गये। जो आदमी यह समझ कर नाम देता है कि मैं किसी को नाम देता हूँ वह अपराधी है, उसमें अहंकार है। नाम दिया नहीं जाता नाम लिया जाता है, तुमको मैं बताए देता हूँ। कौन है नाम लेने का अधिकारी:-

पहले दाता शिष्य भया जिस तन मन अर्पा सीस,
पीछे दाता गुरु भया जिस नाम दिया बख्सीस।

यह कबीर साहिब का शब्द है, वह कहते हैं कि पहले शिष्य दानी बनता है। क्या करता है? वह तन, मन और अपना सिर गुरु के

हवाले कर देता है। अब यह तन, मन और सीस के देने का मतलब क्या है, क्या सिर काट कर दे देता है? सत्संग में जाकर उसको सत्संग से यह ज्ञान हो जाता है कि भई! मैं शरीर नहीं हूँ, मैं मन नहीं हूँ, यह जो कुछ भी है यह तो माया है, मैं नहीं हूँ और उसका अपना अहंकार चला जाता है। जब उसको यह हालत आ जायेगी, उसको नाम मिल गया। मेरी सूक्ष्म बात को समझने की कोशिश करो। दुनिया ने यह समझा हुआ है कि धन दे दो, सिर दे दो यह मतलब नहीं है बल्कि सत्संग में बैठकर बात को समझो कि असलियत है क्या, मैं कौन हूँ? जब उसको यक़ीन हो जाता है कि मैं शरीर नहीं हूँ, मेरे जो ख़्यालात है यह नहीं हैं केवल यह कल्पना है और उसकी अपनी खुदी चली जाती है तो शेष उस आदमी की जो Condition रह जाती है वह है नाम की प्राप्ति अर्थात् वह जो हालत उसकी अपने Self की है वह है नाम की प्राप्ति, यह है नाम दान। मैं नाम दान तो देता हूँ, जो कुछ मेरी वाणी है यही नाम दान है, यही मेरा नाम दान है बशर्ते कि कोई इसको समझे। यदि किसी ने समझना ही नहीं है, अंधेरे में चलना है तो उसका जिम्मेवार कौन है।

आप लोग आ जाते हैं, मैं फँसा हुआ हूँ, घसीटा जा रहा हूँ, तो मैं आप लोगों को क्या कहना चाहता हूँ कि सत्संग में आओ, बात को समझो और अगर फर्ज़ करो कि तुम्हारी बुद्धि इतना नहीं काम करती तो कोई हर्ज़ नहीं, एक इष्ट बना लो और उसको अपने अन्तर समझो,

बाहर नहीं और हर समय यह ख़्याल रहे कि वह तुम्हारा है और तुम उसके हो। मेरे पास प्रतिदिन पत्र आते हैं। कल भी एक आदमी का पत्र आया, घई एक बड़ा अफ़सर है बीमार था। वह कहता है बाबा जी! मैं सख्त बीमार था। बहुत दुखी था, आगे भी उसका पत्र आया था, कहता है कि मैंने फोटो के सामने आपसे गिड़गिड़ा कर प्रार्थना की। आप ने कहा- फलाँ दवाई खा ले, मैंने वह दवाई खाई मैं ठीक हो गया। अब मैं तो गया नहीं, उसको दवाई किसने बताई? उसके अपने मन की सच्ची लगन ने बताई। तो मैं क्या कहना चाहता हूँ? ऐ मेरे मित्रो! बहिनो! भाइयो! गुरु एक ताकत है वह हर समय तुम्हारे अन्तर रहती है, तुम सच्चे दिल से प्रार्थना करो वह तुम्हारी सहायता करेगा, वह हर समय तुम्हारा साथी है। फ़कीर चन्द या किसी भी और गुरु ने नहीं आना, किसी राम ने बाहर से नहीं आना, जो कुछ भी आना है वह तुम्हारे अन्तर पहले ही मौजूद है, यह है जो मैं कहना चाहता हूँ। क्यों कहना चाहता हूँ? मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा, मेरा अपना ही कर्म था। मेरे लिए यह सन्तमत एक बिलकुल नई चीज़ थी। आरती के शब्द में लिखा हुआ है:-

धन्य धन्य गुरु परम सनेही, धन्य दीन हितकारी।
धन्य कृपाला सहज दयाला, भव भय मेटनहारी॥

इस गुरु की वह सिफ़त बताते हैं कि गुरु है क्या?

लीला अगम अपार अमाया, अद्‌भुत क्या कोई जाने।

ऋषि मुनि योगी पार न पावें, ज्ञानी नहीं पहिचानें।

अब देख लो! जब ऐसे शब्द पढ़े कि गुरु जो सहायता करता है उसको ज्ञानी नहीं जान सकते, ऋषि मुनि नहीं पार पा सकते:-

अगुण सगुण के मध्य विराजे नहीं ब्रह्म नहीं माया।
रूप अरूप के वरे परे, नहीं प्रकाश नहीं छाया॥

देखो! वह गुरु को कहते हैं कि रूप-अरूप से परे है, अगुण-सगुण के मध्य विराजता है:-

सब में व्यापक तुम्हारी सत्ता, सत्त असत्त के पारा।
मन, वाणी की गम नहीं, तुममें सब में सब से न्यारा॥

मेरे जीवन की Research है, उस गुरु को तलाश करते-करते आयु गुज़र गई कि नहीं गुज़र गई। मैं नाककटों में तो शामिल नहीं हुआ, ऐसे शब्दों को सुनकर मैंने प्रण किया था कि यह जो कुछ लिखा हुआ है कि वह गुरु कौन है जो सत्त, असत्त और माया, काल के पार है, ब्रह्म भी नहीं है, प्रकाश भी नहीं है वह है क्या चीज़, उसका मुझे पता नहीं लगता था। चूँकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा इसलिए मैं कहता हूँ कि वह जो गुरु है वह है क्या? मुझको असली गुरु का दर्शन केवल सत्संगियों के अनुभवों द्वारा मन के रूप की समझ आने के बाद हुआ। अब जिस तरह घई का कल पत्र आया, मैं तो गया नहीं तो यकीन हो गया न! कि उसकी सहायता करने वाला कौन था? उसका अपना ही मन था। राधास्वामी मत के समझने

वाली दुनिया अभी पैदा नहीं हुई। यह राधास्वामी मत कहता है:-

काल के रक्षक कला दिखाई, काल ने अपनी पूजा कराई।

वह काल कौन है? तुम्हारा अपना मन है। जिसके अन्तर बाबा फकीर प्रकट होता है, उसकी सहायता करता है वह बाहर का कोई नहीं आता, उसका अपना मन ही उसकी सहायता करता है, यह है राज, यह है सच्चाई। तो जब से मुझे यह समझ आई कि सब कुछ मन का चक्कर है तो अब मैं क्या करता हूँ? मन को छोड़ जाता हूँ, मन के परे जाने के बाद जब प्रकाश और शब्द में रह कर उस वस्तु की तलाश करता हूँ जो प्रकाश और शब्द में रहती है वह है सच्चा सत्तगुरु। और वह सत्तगुरु है कौन? मेरी अपनी जात जो गलती में आकर शिष्य बनी हुई थी, उसको अज्ञान था। बाहर का गुरु मिल गया जिसने उसको उसका भेद बता दिया कि बेवकूफ! यह बात ऐसे नहीं, ऐसे है। अब यही समझ आ गई, अब अगर मैं कुछ बन गया तो मैं क्या करूँ?

क्या कह करूँ तुम्हारी अस्तुति अजर अमर अविनाशी।
निरालम्ब सब के आधारा, चेतन धन सुख राशी॥

कौन है अज़र, अमर? वह जो मेरे अन्तर में या तुम्हारे अन्तर में प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है। यदि प्रकाश अजर, अमर हो तो प्रकाश ही रहे, यदि शब्द अजर, अमर हो तो शब्द हमेशा ही रहे, यदि रूप अजर अमर हो तो रूप हमेशा ही रहे। अजर अमर,

तो वह चीज़ है जो मेरे अन्दर या तुम्हारे अन्तर रह कर सब कुछ देखती है जाग्रत में भी वह मौजूद है, स्वप्न में भी वह मौजूद है, सुषुप्ति व तुरिया में भी वह मौजूद है, प्रकाश को देखती है तब भी वह मौजूद है शब्द को सुनती है तब भी मौजूद है वह जो चीज़ है वह है असली सत्तगुरु। और कौन है? वह तुम्हारी अपनी ही ज़ात है कोई दूसरा गुरु नहीं। बाहर के गुरु की यही duty है कि वह जीव को:-

घर में घर दिखलाय दे सो सत्तगुरु पुरुष सुजान।

यह है बाहर के गुरु की duty । परन्तु यह इतनी बड़ी भारी बात है, मैं ठहर नहीं सकता। मैं जानता हूँ, फिर क्या करूँ?

गो गोचर जहाँ लग मन जाई सो नहिं देस तुम्हारा।
माया काल के परे ठिकाना क्या कोई वरणे पारा॥

मुझे पता लग गया, मैंने तुमको समझा भी दिया परन्तु वहाँ ठहरा नहीं जाता, फिर क्या करना है:-

तत्त्व अतत्त्व असार सार नहीं, शब्द सुरत नहीं होई,
सन्त कहें तुम शब्द रूप हो और अशब्द गति सोई।
ऊँची दृष्टि करे जो प्राणी, सार भेद कुछ पावे।

जिस तरह मैंने सार भेद पा लिया कि बात यह है फिर क्या करे?

भेद पाय शरणागत आवे, आवागमन मिटावे।

इस बात को समझकर जब तक जीवन है, वहाँ तो मैं ठहर नहीं सकता, करूँ क्या? शरणातगम्! वह जो परमतत्त्व आधार है

अपने आप को उसके सपुर्द करता रहता हूँ, यहाँ मुझे शान्ति है। शरीर के बाद क्या होगा, यह मुझे पता नहीं, मैं नहीं जानता। तो आज कबीर साहिब का शब्द निकला था:-

सन्तो! देखो जग बौराना॥

नेमी देखे धर्मी देखे करें प्रात अस्नाना।

बहुत ही देखे पीर औलिया पढ़ते वेद पुराना॥

सब में अहंकार था। जो कुछ भी हम करते थे सब में अहंकार है। दुनिया में अहंकार की कई किस्में हैं। स्थूल अहंकार, सूक्ष्म अहंकार, कारण अहंकार, अहंकार के बिना तो हमारा जीवन नहीं है। क्योंकि जब तक हम जिन्दा हैं कहीं न कहीं तो लगेंगे, हमारा कोई न कोई ठहरने का मुकाम होगा। तो जहाँ ठहरने का मुकाम होगा वहाँ अहंकार आ जायेगा परन्तु यदि ज्ञान है तो वह अहंकार जो है वह दुखदाई नहीं होगा। बस इतनी ही बात है और कुछ नहीं:-

घर घर मन्त्र देत फिरत हैं महिमा के अभिमाना।

गुरु समेत शिष्य सब डूबे अन्त काल पछिताना॥

पछताना तो आप ही हुआ। क्योंकि सारी ज़िन्दगी गुरुओं के दरबार में पड़े रहे परन्तु मिला कुछ नहीं, शान्ति नहीं मिली इसलिए दोनों पछताये। अरे! सभी पछताते हैं। मेरे दाता दयाल थे अन्त समय में उन्होंने शब्द लिखा है:-

ले लो चरणों में लगा ऐ मेरे कृपाल दाता।

ज़िन्दगी के झमेले पापड़ थे बहुत बेले,

फिरता हूँ मारा मारा सिर पर है बोझा भारा।

दुखिया की लाज रख ले चित्त ध्यान से न बहके।

क्योंकि उन्होंने भी धाम बनाई थी बाबा सावन सिंह जी थे, एक लाभ सिंह हुआ है और काबुल सिंह C.I.D का इन्स्पैक्टर था, उसने उसको बोला भई! फ़कीर चन्द तो कहता है कि वह कहीं नहीं जाता, उसने पाँच-दस गाली तो फ़कीर चन्द को निकाली और पाँच-दस गाली मेरे गुरु महाराज को निकाली। उसने बोला, गाली तो निकाली, कोई बात सुनाओ? उसने कहा, एक बात मैं जानता हूँ कि जब हजूर बाबा सावन सिंह जी सख्त बीमार थे तो मेरा पहरा था रात को, तीन बजे आवाज़ मारी, कौन है बाहर? जी सच्ची सरकार! ओए लाभ सिंहा जो कुछ मैंने करना सी वो ना कीता। बाबा जी ने कहा था डेरा बना देना, अमीर मेरे काबू आ गये। डेरा बन गया। अब मैं आप दुखी हूँ। इसलिए इसी ख्याल से मैं इस संसार में आया हूँ, मेरे दिमाग को प्रकृति ने हिलाया है कि सन्तमत को साफ कर जाऊँ ताकि हम लोगों को ये महात्मा लोग या गुरु लोग अज्ञान में रख कर लूटें न। ऐसे केस मेरे सामने आते हैं जहाँ मेरा रूप प्रकट होता है कोई मदद कर जाता है, मैं मगर चुप कर जाता तो मैं आज लाखों, करोंड़ो रुपयों का मालिक होता। रोज़ पत्र आते हैं; कोई दिन ऐसा नहीं कि एक-आध पत्र न आ जाये। जितना मर्ज़ी चाहे मैं रुपया कमा लेता परन्तु मैं जानता

हूँ मैं तो गया नहीं। तो मैंने यह काम इसलिए किया है कि यह जो वर्तमान गुरुइज्म या मज़हब हैं इन्होंने गलत ख्याल देकर के हम भोले-भाले अज्ञानी जीवों को मुर्ख बनाकर उनकी ज़ायदादें, उनकी दौलतें ली हैं। इस ख्याल को लेकर के मैंने इन्सान बनो की यहाँ आवाज़ उठाई है।

दुनिया तो अनजान है। एक माई आती है, बीमार है, मेरे पास दवाई लेकर आ जाती। अरे भई! मैं स्वयं बीमार होता हूँ तो डाक्टरों के पास जाता हूँ, मैं तेरा इलाज़ क्या करूँगा! आदमी सहारा चाहता है अगर सहारा उसका सच्चा है तो उसका काम बन जाता है अर्थात् ऐसे-ऐसे केस मेरे सामने आते हैं, मैं तुम लोगों को लूटना नहीं चाहता खुशी से यदि तुम्हारा जी चाहे यदि समझते हो कि मेरा काम ठीक है तो चार पैसे मन्दिर में देना चाहो तो दो अगर नहीं चाहते हो तो मैं इसकी परवाह नहीं करता परन्तु सच्चाई ध्यान करने से टल नहीं सकती। जो कुछ तुमको मिलता है यह तुम्हारा विश्वास है, तुम्हारी श्रद्धा है। तुम्हारा यक़ीन है जहाँ भी तुम रखो, यह बिलकुल सच्ची बात है। अब यह माई है, इसको तो होश नहीं। कहती है मुझे तू ले चलना। अब मैं इसको क्या कहूँ। तेरे कर्मों ने तुझको साथ ले के जाना है, मैंने तुझे पार नहीं ले जाना भाई! मैंने मर जाना है, तुझे कहा है तू विश्वास रखा कर, गुरु हर समय तेरे साथ है, मैं नहीं तेरे साथ रहता, जो सच्चा सत्तगुरु है वह तेरे साथ रहता है। चार दिन के जीवन में मैं

आया हूँ, हेराफेरी करके तुमको लूट के ले जाऊँ; मैं कहाँ जाऊँगा। मेरी तो आँख खोल दी सत्संगियों ने। मेरा भी तो एक दृश्य ही था न अपने जीवन का। बारह वर्ष जो कुछ मैंने कमाया सब दिया, वह समर्थ थे जो उन्होंने नहीं लिया, यह दूसरी बात है परन्तु अज्ञान में आकर लुट गया था न! मैं न हीं चाहता तुम अज्ञान में आओ, खुशी के साथ सहायता करो, जहाँ तुम्हारी मर्ज़ी है करो, नहीं करनी है तो मत करो मगर बात मैं सच्ची कहता हूँ। मेरी तो जान काँपती है, खबर नहीं कि मैं किस तरह मरूँगा, मेरे साथ क्या होगा, मैंने इन महात्माओं का हाल देखा बड़ी-बड़ी बुरी मौत मरें। राधास्वामी दयाल स्वयं दो वर्ष सख्त बीमार रहे, स्वामी रामकृष्ण परमहंस का क्या हाल हुआ और गुरुओं के साथ क्या कुछ बीती, दाता दयाल की धाम उजड़ गई, मैं कहता हूँ इतने महात्मा होकर के फिर इनकी कोई सहायता न हुई? तो मुझको वहम आ गया कि चूँकि इन्होंने जनता में सच्चाई नहीं ब्यान की और यही बात कबीर साहिब ने कही है:-

घर घर मन्त्र देत फिरत हैं, महिमा के अभिमाना।
गुरु समेत शिष्य सब डूबे, अन्त काल पछिताना॥

सभी पछताते हैं! मैं नहीं पछताऊँगा। मैंने किसी को धोखा नहीं दिया न अपनी गरज़ के लिए मैंने कोई काम किया, मन्दिर मैंने जरूर बनाया, एक सच्चाई से बनाया अगर चलना होगा तो चलेगा नहीं तो मुझे क्या परवाह इस बात की। अगर मालिक को मंजूर है सच्चाई

संसार में फैले तो चलेगा अगर मालिक को मंजूर नहीं है तो न चले; मैंने क्या लेना है बिलकुल सच्ची बात।

आप लोग आ जाते हैं आपको एक बात सच्ची कह देता हूँ, कुछ मत करो सिर्फ अपनी नीयत साफ रखो। अपने ज़ाती मतलब के लिए किसी के साथ हेराफेरी, धोखा-फ़रेब, चारसौबीसी मत करो। मेरी समझ में इसके सिवाय और कोई सच्चा धर्म मैंने कोई देखा नहीं। जब आपकी नीयत साफ है आपने अपनी ज़ाती गरज़ के लिए किसी के साथ हेराफेरी, धोखा-फ़रेब नहीं किया तो आपका पाप किसका, गुनाह किसका। जितना जिसने लेना है उतना किसी ने ले लेना है, पिछले जन्म का लेना-देना भुगतान है।

मैंने आपको बहुत कुछ कह दिया। आज कबीर साहिब का शब्द था:-

सन्तो! देखो जग बौराना॥

हिन्दू कहे मोहे राम प्यारा, तुरक कहे रहमाना।

आपस में दोऊ लड़-लड़ मुअे, मरम न काहू जाना।

क्या झूठ है इसमें? मैंने तो इसको साफ कह दिया, कोई मुहम्मद बाहर से तुम्हारे अन्तर में नहीं आता, कोई राम, कृष्ण या बाबा फ़कीर बाहर तुम्हारे अन्तर नहीं आता जिस प्रकार का ख़्याल दिमाग़ में पड़ा हुआ है जब तुम पुकार करते हो, वह संस्कार तुम्हारा, रूप बना के तुम्हारे सामने आ जाता है और हम गलती में पड़ गये कि हाँ!

बाबा फकीर आया या कोई भी और गुरु आया या राम आया और इन्सानी नस्ल बँट गई, कोई मुसलमान बन गया, कोई सिक्ख बन गया, हम को बाँट दिया इन मज़हबों ने, इन पन्थों ने, बिलकुल बाँट दिया। इसका परिणाम? हम दुख भोगते हैं, पाकिस्तान में क्या देखते नहीं हो? इसलिए सन्त दुनिया में आते हैं Unity of Religion and Unity of Humanity (धर्म और मानवता की एकता) के लिए:-

कहत कबीर सुनो भाई साधो, यह जग भरम भुलाना।

केतिक कहूँ कहा नहीं माने, आप ही आप बंधाना॥

आप ही बंधे हुए हैं, तमाम जगत् बौराना हुआ है परन्तु इस बौराने से बचना बड़ा मुश्किल है, मैं भी कहता तो हूँ मगर मैं जानता हूँ यह कितना कठिन काम है क्योंकि ऊँचे दर्ज़े को मैं भी जानता तो हूँ मगर ठहर नहीं सकता। तो मेरी समझ में क्या आया? जब तक जीवन है शरणागतम्'। एक मालिक है, उसका एक रूप मान लो, उसको मत समझो कि वह फ़कीर चन्द है या कोई और गुरु है उसको मालिक का रूप मान लो। अपने आपको उसके सपुर्द करते रहो चलते-फिरते उठते-बैठते, तो तुम्हारे सारे काम न हो जायें तो मुझे जो मन में आये कहो, मैं जिम्मेवार हूँ। मेरा अनुभव कहता है न! लोग मेरे रुप में मानते हैं, उनके काम हो जाते हैं और मेरे बाप को पता नहीं होता कि कौन उनकी सहायता कर गया। इससे मुझे यक़ीन हो गया न! कि जो कुछ है ऐ इन्सान! तेरा अपना विश्वास है, तेरा अपनी यकीन है, तेरा अपना

ही निश्चय है। आप मेरे पास आ जाते हैं मैं एक जिम्मेवारी को महसूस करता हूँ। संक्षेप में बता देना चाहता हूँ, कहीं मत भटका खाओ, केवल उस मालिक को मानो। चूँकि उसका कोई रूप नहीं है, वह सबसे न्यारा है। एक रूप उसका मान लो, बस! अपने आप को उसके सपुर्द करते रहो तुम्हारे सारे काम दुनिया के होते रहेंगे, मेरे होते हैं और दूसरों के होते हैं तो इससे मुझे यकीन हो गया। मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ दाता! आप ने काम दिया था, मुझे नहीं पता मैं ग़लत हूँ या मैं ठीक हूँ मेरे कर्म थे आपके चरणों में चला गया, आपने कहा तालीम बदल जाना। हो सकता है मेरे भाइयों! वीरो! मैंने जो कुछ समझा हो सारा ग़लत हो, मेरा कोई दावा नहीं आपका जी चाहे मेरे सत्संग में आया करो जी चाहे मत आया करो। मैंने अपना कर्म भोगा, गुरु की आज्ञा पालन किया, जो मेरा अपना ज़ाती तजुर्बा था उसको मैंने लिया और साफ शब्दों में ज़ाहिर कर दिया। ठीक है या गलत है इसका मैं जिम्मेवार नहीं, मेरी नीयत साफ है। आप लोग आ जाते हैं मैं बड़ी जिम्मेवारी को महसूस करता हूँ। बहुत जिम्मेवारी को महसूस करता हूँ!! और सच्चे दिल से मालिक से प्रार्थना करता हूँ दाता! आपने काम दिया था, यह लोग आ जाते हैं, अब मेरी दाढ़ी की इज्जत या तेरे नाम की इज्जत तू रख! ये बेचारे दुखी आते हैं इनके काम बन जायें!! मैं यही कर सकता हूँ इससे ज्यादा और मेरे पास कुछ नहीं।

सब को राधास्वामी!

सत्संग

परमसन्त हजूर मानवदयाल जी महाराज

मानवता मन्दिर, होशियारपुर

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः, पूजामूलं गुरोः पदम्।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्षमूलं गुरोः कृपा॥
परमतत्त्वस्य अवतारम्, दातादयालस्य प्रियतमम्।
मानवस्य परम इष्टम्, फ़कीरं वन्दे जगद्गुरुम्॥

राधास्वामी।

मेरी अपनी ही आत्मा के स्वरूप प्यारे भाईयो और बहनो!

इस स्थान पर लालचन्द जी के मकान पर खासकर सत्संग के निमित्त हम इसलिए एकत्र हुए हैं क्योंकि वे परम दयाल जी महाराज के शिष्य थे और उनकी आत्मा पवित्र और बहुत ऊँची थी। आत्मा तो सदा अमर है और वह अपने पिछले जन्मों के मुताबिक ऐसी जगह जन्म लेती है जहाँ वह अपना कर्त्तव्य निभाते हुए, गृहस्थ में रहते हुए बच्चों और रिश्तेदारों से प्यार करते अन्त में जहाँ से आई है वहाँ वापस चली जाती है। जगत् में आई हुई हरएक आत्मा को हर जन्म और हर योनि में यह अवसर दिया जाता है कि वह अपने जीवन में अपना कर्त्तव्य पूरा करे। इसलिए गृहस्थी ही अन्त में उस हालत पहुँचे जिसे राधास्वामी की हालत कहते हैं। राधास्वामी अवस्था क्या है? विशुद्ध आत्मा, जिसे सुरत कहते हैं, इस शरीर में रहते हुए कुल मालिक में

मिल जाये। इसके रास्ते में दर्ज़े हैं जिन्हें स्वर्ग-नरक कहते हैं। ये सब दर्ज़े हैं। कई आत्माएँ यहाँ पहुँच कर अटक जाती हैं। यह प्राणमय कोष है। पृथ्वी अन्नमय कोष है। कई आत्माएँ यहीं अटकी रहती हैं। लोग सवाल करते हैं कि मरने के बाद क्या होता है? यह एक वैज्ञानिक प्रश्न है। आज का विज्ञान इसको मानता है। ये कोष भी वस्त्र जैसे हैं, जैसे कि ठंड में इस शरीर के ऊपर कोट, कोट के ऊपर ओवरकोट पहन लेते हैं। ठंड ज़रा कम हुई कि हम ओवरकोट उतार देते हैं और कम हुई तो कोट भी उतार देते हैं। नीचे कमीज और बनियान है। आत्मा तो एक प्रकार की ज्योति है जो कुल मालिक से अलग होकर चमकती रहती है। उसके ऊपर आनन्दमय कोष, विज्ञानमय कोष, मनोमय कोष, प्राणमय कोष और अन्नमय कोष इसी तरह हैं जैसे हमारे शरीर पर बनियान, कमीज, कोट और ओवरकोट हैं। शरीर ख़त्म हो जाने पर भी आत्मा अपने सूक्ष्म शरीर में अन्तरिक्ष में रहती है। इसे नंगी आँखों से देखा नहीं जा सकता, पर कैमरे से उसकी फोटो ली जा सकती है। वह प्रकाशमय सूक्ष्म शरीर भी आपके स्थूल शरीर के जैसा ही है। जिससे लोग मृत्यु के बाद भी अपने प्राणमय कोष के सूक्ष्म शरीर में व्यक्ति मौजूद रहता है। कई व्यक्तियों को स्थूल शरीर की मृत्यु से मृत्यु का आभास नहीं होता। मुसलमान लोग शरीर को मिट्टी में दबा देते हैं, इससे उनका मोह शरीर में रहता है और वे कब्रिस्तान में भूत बनकर रहते हैं। हिन्दुओं में शरीर को जला देने से उनका मोह हट जाता है और उनकी आत्मा ऊपर चली जाती है। सनातन धर्म का यह तरीका वैज्ञानिक और उत्तम है। मृत्यु के बाद तीन दिन तक प्रत्येक आत्मा भुव: लोक में रहती है

और चलती-फिरती, देखती-सुनती रहती है। इसलिए हिन्दुओं में पिण्ड भरते हैं और तिनका तोड़ते तथा पुतला काटते हैं जिससे आत्मा का मोह शरीर से टूट जाता है और वह ऊपर को चली जाती है। जिसने बहुत पाप किया है, अर्थात् दूसरों को बहुत दु:ख दिया है, उसकी आत्मा भी बोझिल और शरीर से बँधी होती है। इसलिए हमें औरों को सुख देने का संस्कार दिया जाता है:-

'परहित सरिस धर्म नहिं भाई,
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।'

अत: हमें शरीर से, विचार से या वचन से कभी किसी को दु:ख नहीं पहुँचाना चाहिए। इसीलिए मैं कई बार कहा करता हूँ कि यदि आप सुख और शान्ति पाना चाहते हो, तो पहले अपने कर्म को ठीक करो— सुधारो। कर्म का ही फल सब किसी को भोगना पड़ता है, चाहे वह सन्त हो या अवतार। कर्म को सुधारने का सीधा मतलब है कि हर एक प्राणी से प्रेम का व्यवहार करो। न किसी के शरीर को कष्ट दो, न मन को दुखाओ। प्रेम से मीठे वचन बोलो। इससे आपको ब्लड प्रैशर (रक्त-चाप) की बीमारी कभी हो ही नहीं सकती। यह बीमारी गुस्सावर आदमियों को ज़्यादातर होती है। गुस्सा करने से शरीर में ज़हर फैल जाता है। अमेरिका में एक बार 25 वर्ष की एक महिला अपनी नन्हीं-सी बच्ची को स्तनपान करा रही थी कि इसी बीच अचानक उसके पति से उसका झगड़ा हो गया। महिला को बहुत क्रोध हो गया और उसके शरीर में ज़हर फैल गया जिसके परिणामस्वरूप उसका दूध विषाक्त हो गया और उसकी बच्ची मर गई। यद्यपि स्तनपान कराने का प्राकृतिक और वैज्ञानिक है। हमारे यहाँ आरम्भ से ही यह तरीका अपनाया गया है। बच्चों का माँ का दूध प्राकृतिक पिलाना हर दृष्टि से अच्छा है। एक तो बच्चे के स्वास्थ्य के

लिए यह प्राकृतिक है साथ ही माँ का स्नेह दूध के साथ बच्चे में जाता है जिससे उसका स्वभाव मानवीय होता है। माता के स्वास्थ्य के लिए भी स्तनपान कराना आवश्यक है। फैशन में जो बच्चों को डिब्बे का दूध पिलाते हैं उसमें प्रेमभाव नहीं आता। 'दूध तो डिब्बे का है, तालीम है सरकार की', फिर बच्चों को स्वाभाविक प्यार तो मिला नहीं। बड़े होकर वे उद्दण्ड हो जाते हैं, उनमें हीन भावनाएँ पैदा हो जाती हैं। यह नहीं होना चाहिए। यह पश्चिम की नकल करना ग़लत है। पश्चिम की महिलाएँ ज़्यादातर ऐसा करती थीं। अब वहाँ पर भी डिब्बे के दूध का प्रयोग कम होता जा रहा है क्योंकि वैज्ञानिकों और डाक्टरों ने इससे पैदा होने वाली बुराइयों और बीमारियों को स्पष्ट कर दिया है। अमेरिका वाले अब हमारी सभ्यता अपना रहे हैं और हम ग़लती से उनकी ग़लत सभ्यता अपना रहे हैं। बच्चे के जन्म के साथ ही माँ के स्तन में कुदरती तौर से दूध आ जाता है। अगर माँ बच्चे को दूध नहीं पिलाती, तो वह ज़हर हो जाता है जिसकी वजह से माताओं को छाती का कैंसर हो जाता है और उसका ज़हर खून में फैल जाता है जिससे दूध भी विषाक्त हो जाता है। उस अमेरिकन महिला की बच्ची इसी कारण मरी कि उस माँ ने क्रोध किया जिससे उसका दूध विषाक्त हो गया। तो कहने का मतलब यह है कि घरों में माता-पिता को क्रोध नहीं करना चाहिए। कटु शब्द न बोल कर मधुर शब्द बोलो। मीठी वाणी से एक तो आप हिंसा करने के पाप से बचोगे, दूसरे आपको क्रोध न होने से ब्लड प्रैशर नहीं बढ़ेगा और आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। मीठे शब्दों में बड़ा प्रभाव होता है जिससे दूसरों पर आपका अच्छा प्रभाव पड़ता है। इससे औरों को भी लाभ पहुँचता है और आपको भी:-

'तुलसी मीठे वचन से

पुख उपजे चहुँ ओर।
वशीकरण इक मंत्र है,
तज दे वचन कठोर॥'

दो साधु जा रहे थे। उनको प्यास लगी। पास में एक प्याऊ पर महिला पानी पिलाती थी। युवक साधु बोला, 'पहले मैं पानी पी कर आता हूँ।' दूसरा साधु बोला, 'अच्छा भाई, जा पहले तू ही पी आ।' संयोग से वह महिला एक आँख से कानी थी। युवक साधु उसके पास जा कर बोला, 'कानी माई पानी पिला।' महिला को युवक साधु के वचन बहुत बुरे लगे और उसने क्रोध से गाली देते हुए कहा, 'जा तुझे पानी नहीं पिलाती।' युवक साधु उलटे पाँव वापिस आकर दूसरे साधु से बोला, 'महिला बड़ी दुष्ट है, मुझे पानी भी नहीं पिलाया और उलटे गाली भी सुनाई।' साधु ने पूछा, 'बता, तूने उससे क्या कहा?' बोलो, 'मैंने कहा कानी माई, पानी पिला और तो कुछ भी नहीं कहा।' 'मूर्ख! तूने ऐसा शब्द क्यों कहा?' बोला, 'मैंने तो सत्य बात कही, वह एक आँख की कानी है।' साधु ने कहा, मूर्ख क्या तुझे मालूम नहीं:-

'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्,
मा ब्रूयात सत्यमप्रियम्।'

अर्थात् 'सत्य भी बोलो, तो मीठे शब्दों में बोलो, कटु सत्य न बोलो।' युवक साधु बोला, 'यह कैसे सम्भव है?' बूढ़ा साधु बोला 'देख! मैं अभी दिखाता हूँ।' वह उस महिला के पास गया और बोला, 'सुन्दर माई! मुझे प्यास लगी है, क्या थोड़ा जल मिलेगा?' महिला बोली, 'लो बाबा, शीतल जल पीओ। मैं इसीलिए यहीं बैठी हूँ।' साधु बोला, 'माई लगता है तुझे बचपन में शीतला महारानी का प्रकोप हो गया था।' महिला बोली 'हाँ बाबा, बड़ी माता निकली थी।' साधु

बोला, 'अच्छा, उसी में तेरी एक आँख भी जाती रही।' बोली 'हाँ बाबा।' साधु बोला, 'मालिक की भी क्या लीला है। ऐसी सुन्दर माई को एक आँख से कानी कर दिया। अच्छा माई, राम राम कहो।' माई ने उसे बड़े प्रेम से शीतल जल पिलाया और वह साधु लौट कर युवक साथी से बोला, 'देखा? मैंने उसे कानी भी कहा और उसने प्रेम से पानी भी पिलाया।'

सचमुच प्रेम में बड़ी शक्ति है। अगर आप सहानुभूति और प्रेम के मीठे शब्द बोलो, तो कोई ताकत नहीं जो आप को मालिक के पास जाने से रोक सके। मालिक क्या है? मालिक एक अवस्था है जिसका न आदि है, न अन्त है। वह अनन्त है, निर्विकार है। सच्चिदानन्द है। जिन दोषों, रोग और शोक का आप अनुभव करते हो, वे सब केवल शरीर, मन और आत्मा के स्तर पर ही है। मालिक के अन्दर कोई दोष, विकार या शोक नहीं है। मालिक का अंश आपके अन्दर भी मौजूद है। आप भी मालिक की तरह रोग, शोक आदि सब विकारों से आज़ाद हो सकते हैं। अगर आप अपने आपको अपने अन्दर बैठे हुए मालिक के साथ मिला दो, राधा को स्वामी से मिला दो। यह सच है कि यह साधना कठिन है। इसीलिए परमधाम से मालिक स्वयं सन्त सद्गुरु के रूप में नीचे आता है और जीवों को सीधा-साधा तथा सच्चा रास्ता बताने के लिए। लोग समझते नहीं हैं। मालिक का अवतार हर समय होता रहता है, मालिक समय की ज़रूरत के मुताबिक हर युग, हर समय में जीवों को चिताने के लिए आता रहता है।

(क्रमशः)

गुरु पूर्णिमा उत्सव

परमसन्त हजूर दयाल कमल जी महाराज

मानवता मन्दिर, होशियारपुर -16.7.2019

राधास्वामी

आप सबको यह पवित्र दिन मुबारक हो आप सबकी मनोकामनाँए पूरी हों। आज गुरु पूर्णिमा है तथा साथ ही साथ आज चौदहवीं का चाँद यानि पूरा चन्द्रमा होता है। मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ जैसे चाँद की चाँदनी सबके दिल में ठण्डक देती है वैसे ही आपके दिल में ठण्डक आ जाये।

भारत की संस्कृति, इस देश की परम्परा, इस देश की बड़ी भारी महिमा है जिसको हमने भुला दिया। यह दिन वास्तव में 'व्यास ऋषि' का जन्म दिन है। गुरु परम्परा में व्यास को सबसे बड़ा ऋषि व गुरु माना जाता है इसलिए उनकी पूजा होती है। आज हमारे यहाँ जगह-जगह मन्दिरों में गुरु की पूजा हो रही है। इस देश में कुछ वर्षो से गुरु की ही नहीं पूजा हो रही है बल्कि ससुर की भी पूजा होती है, पति की भी पूजा होती है, भाई की भी पूजा होती है, माँ की पूजा भी होती है और पिता की पूजा भी होती है। 'करवा चौथ' का व्रत क्या है? बहू सास की पूजा करती है, कपड़े देती हैं, गहने देती हैं। सास की

पूजा होती है जिसने उसे पति दिया। भाई की बहनें पूजा करती हैं, जिसके लिए 'भाई-दूज' आ गया। मैं अमेरिका में था जिनके पास मैं रुका था उनका लड़का एक मशीन लाया। वह कहता है महाराज जी आज 'मदर्स डे' है तो मैं मम्मी के लिए मशीन लाया हूँ। मैंने पूछा यह कैसी मशीन है? वह बोला जो हमारे यहाँ गलीचे बिछे हुए हैं उन्हें हाथ से साफ नहीं करना पड़ेगा। बस मशीन का बटन दबा दिया देखो! यह बिल्कुल साफ कर देगी। मैंने कहा यह तो बहुत अच्छा है। मदर्स पूजा भी हिन्दुस्तान में शुरु हो गई है। एक दिन शाम को मैं घर में बैठा था। मेरा बड़ा बेटा एक लिफाफा लेकर आया और उसे मेरी गोद में रख दिया और मत्था टेका। मैंने पूछा बेटा यह क्या है? कहता है आज 'फादर्स डे' है। मैंने पूछा क्या मेरी पूजा की है? हाँ, आपकी पूजा की है। मैंने कहा बेटा हर रोज कर लिया कर।

ऐ इंसान तेरी ज़िन्दगी में गुरु की बड़ी महिमा है। क्यों महिमा है? इसलिए नहीं कि वो प्रसाद बना कर दे देता है, आशीर्वाद देता है, गुरु की महिमा इसलिए है कि वह हमारे भ्रम को दूर करता है। आशीर्वाद तो आपका अपना विश्वास है। सूरज रौशनी देता है तुम लेते हो। अगर नहीं लेनी है तो अन्दर कमरे में चले जाओ। हवा सबके लिए चल रही है। गुरु की महिमा ऐसी है जो लेना चाहते हो ले लो। परमदयाल जी महाराज बार-बार कहते थे- मैं कुछ नहीं देता तुम्हारा विश्वास है। तुम दूर-दूर से आते हो पैसे दे रहे हो, कई माताओं ने मुझे कपड़े दिए, माथे पर तिलक भी लगाया। मैं उनको प्रणाम करता हूँ ।

मैं उनके लिए कामना करता हूँ कि वे जिस इच्छा से आते हैं उनकी वह इच्छा पूरी हो जाये और मेरे पास कुछ नहीं है।

आप लोग इतनी दूर-दूर से आये हैं बड़े प्रेम से आये हैं। मैं अपने-आप से पूछता हूँ कि तू क्या दे सकता है? तू भाषण दे सकता है इससे ज्यादा कुछ नहीं। नहीं, मैं उससे भी ज्यादा तुम्हें देना चाहता हूँ बशर्ते कि आप उसे लेने को तैयार होंगे। जो मेरे सद्गुरु ने मुझे दिया वह क्या है उसे ध्यान से सुनना और अगर हो सके तो उस पर चलने की कोशिश करना। तुम्हें जिन्दगी में कुछ माँगने की जरूरत नहीं रहेगी कैसे? संसार में दुख भी है और सुख भी है। संजोग भी है और वियोग भी है, जन्मना भी है और मरना भी है। हमने इससे निकलना है। हमारे जीवन के दो अंग हैं या दो भाग हैं- एक सांसारिक भाग है और एक गैर सांसारिक भाग है। एक धार्मिक दुनिया है और एक अधार्मिक दुनिया है। सांसारिक दुनिया में चलने के और नियम हैं। मैं आज गुरुपूर्णिमा के अवसर पर दोनों बातें आपके समक्ष रखने जा रहा हूँ ताकि तुम दोनों में कामयाब हो सको। मेरे दाता ने मेरे दोनों हाथ भर दिए। दुनिया भी दे दी और दीन भी दे दिया। मैं चाहता हूँ तुम भी ले जाओ।

इस संसार में सुखी रहने के लिए धार्मिक जगत है, धार्मिक आस्था और विश्वास है। तुम किसी न किसी परम्परा के साथ जुड़े हुए हो, जहाँ तुम्हें जीने का कुछ ढंग मिलता है- उसको गुरुद्वारा कह लो,

मन्दिर कह लो तुम जो मर्जी कह लो। तुम्हें इस दुनिया में रहते हुए किसी सिद्धान्त पर चलना पड़ेगा, किसी बुजुर्ग की नसीहत हो मानना पड़ेगा। बिना इष्ट के भी संसार नहीं चलेगा। तुम अपनी शक्ति लगाओ और जितनी मर्ज़ी लगाओ लेकिन फिर भी कहीं न कहीं सहारा लेना पड़ेगा। ये बल्ब जग रहा है इस बल्ब की अपनी कोई ताकत नहीं है इसको कंरट कहीं और से आ रहा है। कंरट की भी हस्ती नहीं है वह भी किसी दूसरे केन्द्र से आ रहा है। हमारा एक आधार है जैसे शरीर स्थूल है। इसको खाना चाहिए, इसको पानी चाहिए। अगर इसको खाना-पानी नहीं मिलेगा तो ये कमजोर पड़ जायेगा। इसीलिए कहते हैं अच्छी खुराक खाओ सेहत बनाओ। जो धरती माता ने दिया है उसको खाओ इसके अलावा कोई खाने की वस्तु नहीं है। अगर उसके सिवा कुछ खाते-पीते हो वह आपके स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं है।

दुनिया में हमारा साथ देने वाला मन है। मन बहुत शक्तिशाली है। मन में अटूट शक्ति है इसकी अपनी शक्ति नहीं इसके पीछे कोई ओर हस्ती है। तुम उस मन की शक्ति को जो कुछ प्राप्त करना चाहते हो उसमें लगा दो। पढ़ने वाले पढ़ने में लग जाएं बिजनैस वाले बिजनैस में लग जाएँ। तुम जो भी काम करते हो उसको पूरी लगन के साथ करो और उस को करते-करते थक जाओ। आपके मन में कुछ ऐसा न रहे कि मैंने यह नहीं किया। दुनिया में पूरी मेहनत करो। मन और शरीर की ताकत के साथ तरक्की करो। मैं तो तब

विद्यार्थी था पढ़ा करता था उन्हीं ने मुझे प्रौफेसर बना दिया, उन्हीं ने मुझे प्रिंसीपल बना दिया। उन्होंने ने ही मेरे सारे काम करवा दिये। मेरे सद्गुरु कहा करते थे- ब्रह्म बनो, बढ़ो। जितने बढ़ सकते हो बढ़ो। धन कमाओ, इज्जत कमाओ, बड़ी-बड़ी कोठियाँ बनाओ, बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ लो, अपने बच्चों को काबिल बनाओ। अरे! जिसके पेट में रोटियाँ नहीं है वह नाम क्या खाक जपेगा। पहले अपनी जिन्दगी जीने के लिए सब सुख-सुविधाएँ पैदा करो और थक जाओ। इसीलिए स्वामी जी महाराज ने Condition लगा दी कि जो दुनिया में नहीं थकेगा वो अध्यात्म प्राप्त नहीं कर सकता। वो उसका हकदार नहीं है। जिस माँ ने बच्चा ही पैदा नहीं किया उसको क्या पता कि माँ का दुख क्या होता है। जिस बाप ने अपने बेटे की ऊँगली ही नहीं पकड़ी, ऊँगली पकड़कर मेला नहीं दिखाया वह बाप औरों को क्या शिक्षा देगा। इसलिए स्वामी जी महाराज ने कहा-

विषयों से जो होए उदासा परमारथ की जा मन आसा।
धन संतान प्रीत नहीं जाके खोजत फिरे कोई साधु जाके॥

सब कुछ ले लिया, अब मिठाई खाने को दिल नहीं करता, नमकीन खाने को दिल नहीं करता, बच्चों का प्यार भी देख लिया, पत्नी का प्यार भी देख लिया सब कुछ देख लिया- अब अपने आपसे भी प्यार करना है। सबसे प्यार करो लेकिन कुछ समय अपने-आप से प्यार करने के लिए रख लो। उसके बगैर तुम पूर्ण नहीं हो तुम अधूरे

हो क्योंकि तुमने दुनिया का अनुभव नहीं लिया, तुम्हें गृहस्थ का अनुभव नहीं मिला, तुम्हें बाप का अनुभव नहीं मिला, तुम्हें पति का अनुभव नहीं मिला; तुम्हें पत्नी का अनुभव नहीं मिला, तुम्हें माँ का अनुभव नहीं मिला। फिर तुम कैसे उम्मीद कर सकते हो कि तुम्हें उसका अनुभव हो जाये, कभी नहीं होगा। पूर्ण वही है जिसने इस शरीर में आकर पहले ब्रह्मचर्य को देखा फिर गृहस्थ को देखा इस जीवन को भोग लिया। फिर वानप्रस्थ (70-75) को देखा। फिर सन्यास में आ गया। तब पता चल गया कि ये दुनिया है क्या। यह दुनिया रुबाव है जब यह पता लग जाता है तब किसी और से दिल लग जाता है। वो जो दिल लगता है वही असली दिल है, जो दुनिया से लगा हुआ है वह असली दिल नहीं है।

किसी सिद्धान्त की शरण में जाओ, किसी ब्रह्म की शरण में जाओ जिसका सहारा लेकर तुम दुनिया में कामयाब हो सकोगे। वह सहारा कई तरह का है- किसी ने देवी का सहारा ले लिया, किसी ने देवता का सहारा ले लिया, किसी ने धर्म स्थान का सहारा ले लिया। मैं किसी का भी खंडन नहीं करता हूँ। जहाँ-जहाँ भी जो है, ठीक है। पहली कक्षा का बच्चा दसवीं कक्षा का पेपर नहीं कर सकता। जो पहली कक्षा में है वह पहली कक्षा की ही बात करेगा। जो दूसरी कक्षा में है वह दूसरी कक्षा की बात करेगा, जो दसवीं कक्षा में है वह दसवीं कक्षा की बात करेगा। जो एम.ए. में है वह उसकी बात करेगा। यह सिद्धान्त पहली भी पढ़ा देता है और एम.ए. भी पढ़ा देता है। यह

परमदयाल बाबा फकीरचन्द जी का केन्द्र है। इसलिए पहले पूर्ण बनो। तुम हो ही पूर्ण, तुमने अपने-आपको समझा नहीं। अरे! कुदरत ने तुम्हें पूरे पाँच तत्त्व दिये हैं। किसी भी जीव-जन्तु में पाँच तत्त्व नहीं हैं। किसी में एक है, किसी में दो है और किसी में तीन है। चार पैरों वाले में चार है। तुम पूर्ण पाँच तत्त्व के इन्सान हो। तुम पाँच कर्मेन्द्रियों के मालिक हो और पाँच ज्ञानेन्द्रियों के मालिक हो। तुम मन, चित्त, बुध चार चीज़ें अपने अन्दर लिए बैठे हो। तुम चौदह कलाओ से पूर्ण हो। कोई भी चौदह कला सम्पूर्ण नहीं है। कोई देवी-देवता चौदह कला सम्पूर्ण नहीं है। वो तो खुद ब्रह्माण्ड में घूम रहे हैं कि हम भी इन्सान बनकर दुनिया में जाएँ और हमारा भी कल्याण हो जाए। हम कलयुगी हैं, बड़े भाग्यशाली हैं। कलयुग में हर काम बहुत जल्दी होता है। यदि दुनिया का काम जल्दी होता है तो उसके घर जाने का काम भी बड़ी जल्दी होता है। इसलिए पहले अपने तीन चरण पूरे करो। सांसारिक जीवन को पहले सफल बनाओ। मेरा भी बना मेरी केवल अठारह वर्ष की उम्र थी जब उनके श्री चरणों में आया। पच्चीस का हो गया एजुकेशन पूरी कर ली। पच्चीस से पचास गृहस्थ भोग लिया। पचास के बाद वानप्रस्थ आया। पत्नी ने टाँय-टाँय कर दी वह चली गई, कोई अफसोस नहीं किया। उसने अपने फर्ज़ निभाया जितना साथ देना था उतना दिया। अब मैं सन्यास का जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। सन्यासी का क्या काम है? सन्यासी का काम है जो प्राप्त किया उसे बाँट देना। उसका फर्ज़ है जिस गुरु ने उसकी झोली को

भरा है। उस झोली में से सब कुछ दुनिया में बाँट जाये।

मैंने तुम्हें एक बात कही कि तुम दुनिया में दो तत्त्वों का प्रयोग करो- शारीरिक शक्ति और मानसिक शक्ति। इनका प्रयोग करके दुनिया में तरक्की करते-करते थक जाओ। जब तुम थक जाओगे तब क्या होगा। आज गुरु पूर्णिमा के दिन आपको बता देता हूँ। आप सबमें चार चीज़ें हैं शरीर, मन, आत्मा और सुरत। एक शरीर है जो नजर आता है मन नजर नहीं आता। आत्मा भी नजर नहीं आती और सुरत भी नजर नहीं आती। आपने शारीरिक और मानसिक तरक्की करनी है और अगर उधर चलना है आत्मिक और सुरत की शक्ति चाहिए। तुम सब में दो चीज़ें बराबर हैं और दो चीज़ें बराबर नहीं है। शारीरिक रूप से हम सब अलग-अलग हैं। हमारा शरीर समय के वातावरण के मुताबिक, माता-पिता के संस्कार के मुताबिक, माता-पिता के संस्कार के मुताबिक, हमारे हालात के मुताबिक हमारा शरीर बना है। इसलिए हमारे शरीर अलग-अलग हैं और हमारे मन भी अलग-अलग है। हमारे मन आपस में नहीं मिल सकते। पति का मन और है पत्नी का मन और है। बेटे का मन और है बाप का मन और है। शिष्य का मन और है गुरु का मन और है। दो चीज़ें ऐसी हैं जो तुम सबमें है। माताओं, बहनों में भी वही है और तुम में भी वही चीज है। छोटी जाति वालों में भी वही चीज है । मालिके-ए-कुल ने, ईश्वर ने, खुदा ने, अल्लाह ने, वाहे गुरु ने कोई फर्क नहीं डाला। वो क्या है ? आत्मा। तुम सब प्रकाश रूप हो, तुम्हारी आत्मा प्रकाश रूप है। तुम सुरत रूप

हो। तुम सब में सुरत एक जैसी है। ये और बात है कि आपने सुरत का अनुभव नहीं किया और आपको आत्मिक भी ज्ञान नहीं है। तुम मन के हिंडोले में झूला झूल रहे हो इसलिए तुम वहाँ तक नहीं जा सके। कबीर साहिब का एक शब्द है-

मन तू थकत थकत थक जा

ऐ मेरे मन तू अब थक जा। यदि तुम थके हुए हो तुम्हारा बच्चा तुम्हारे पास आता है, तुम कहोगे ठहर जा मुझे आराम करने दे। आराम प्यारा है बच्चा प्यारा नहीं है।

आपको कई बार यह सुनने को मिला होगा ईश्वर परमेश्वर अब ईश्वर परमेश्वर क्या है ? न ईश्वर कहीं बाहर रहता है और न परमेश्वर कहीं बाहर रहता है। ईश कहते हैं शक्ति को और वर मालिक को कहते हैं। लड़की की शादी करनी है उसके लिए वर ढूँढना है। पति को वर कहते हैं। ईश ताकत है और वर उसका मालिक है। तुम्हारे अन्दर वो ईश है, तुम्हारे अन्दर वो शक्ति है जिसको ब्रह्म कहते हैं। ब्रह्म का क्या काम है ? उत्पत्ति करना। तुम्हारे ब्रह्म का क्या काम है ? सन्तान को जन्म देना। तुम उसके मालिक हो। तुम उस शक्ति का इस्तेमाल कैसे करते हो ये तुम जानो मगर वही तुम्हारे अन्दर ईश्वर है। वह स्थूल रूप में है नज़र आता है और तुम्हारा ख्याल, तुम्हारा विचार तुम्हारा सूक्ष्म ब्रह्म है क्योंकि वह ख्याल तुम्हारी जिन्दगी को बनाता है।

आप मानवता मन्दिर में बाबा फकीर के दरबार में बैठे हो। ये ख्याल ही तुम्हारी दुनिया बनाता है, ब्रह्म तुम्हारी सन्तान पैदा करता है तो क्या तुम अपनी दुनिया के मालिक नहीं हो। तुम कहाँ माँगने जाते हो? किससे माँगने जाते हो? तुम विष्णु का रूप हो क्योंकि भोगने वाला विष्णु है, सेवा करने वाला विष्णु है तो तुम विष्णु हो। तुम छोड़ भी देते हो तो शिव का रूप हो। अरे! ब्रह्मा भी तुम में है, विष्णु भी तुम में है और शिव भी तुम में है तो कहाँ जा रहे हो? यह सत्संग है मैं भाषण नहीं दे रहा। मैं तुम्हें दर्दे दिल से कुछ कहना चाहता हूँ ताकि तुम्हारी जिन्दगी में परिवर्तन आ जाये। तुम्हारी जिन्दगी में खुशियाँ आ जायें। तुम्हें किसी बात की कमी न रहे। तुम सोचो बाद में और तुम्हारा काम पहले हो जाये। ऐसा होता है- **जे तू मेरे वल है तो क्या मुशन्दा।** जब तू ही मेरे साथ हो गया, अब मुझे कुछ नहीं चाहिए।

परम ईश्वर क्या है? परम ईश्वर भी तुम्हारे अन्दर है। उस परम ईश्वर के बगैर तुम्हारा शरीर किसी काम का नहीं। आत्मा तुम्हारे शरीर को दो चीज़ें देती है- तुम्हारा शरीर गर्म और तुम्हारी नस-नाड़ियाँ चल रही हैं, दिल धड़क रहा है ये आत्मा कर रही है। परमेश्वर वो ताकत है जिसके कारण मैं बोल रहा हूँ, जिसके कारण मैं देख रहा हूँ, मैं सुन रहा हूँ, जो मेरे अन्दर के सारे सिस्टम को चलायमान कर रहा है। वो क्या है? वह सुरत है। दूसरे शब्दों में यदि कोई आदमी बेहोश हो जाये- न वह बोल सकता है, न वह सुन सकता है, न वह देख सकता है, न वह हाथ हिला सकता है। तो वह

परमेश्वर हुआ न ताकतवर। अब हमने उस ताकत को मिलना है। तुम गुरु पूर्णिमा में आए हो। उस ताकत को कैसे मिलेंगे? गुरु की मदद से मिलेंगे-

गुरु मोहे अपना रूप दिखाओ॥
यह तो रूप धरा तुम सर्गुण। जीव उबार कराओ॥
रूप तुम्हारा अगम अपारा। सोई अब दरसाओ॥
देखूँ रूप मगन होय बैठूँ। अभय दान दिलवाओ॥
यह भी रूप पियारा मो को। इस ही से उसको समझाओ॥
बिन इस रूप काज नहिं होई। क्यों कर वाहि लखाओ॥
ता ते महिमा भारी इसकी। पर वह भी लखवाओ॥
वह तो रूप सदा तुम धारो। या ते जीव जगाओ॥
यह भी भेद सुना मैं तुमसे। सुरत शब्द मारग नित गाओ॥
शब्द रूप जो रूप तुम्हारा। वा में भी अब सुरत पठाओ॥
डरता रहूँ मौत और दुख से। निर्भय कर अब मोहिं छुड़ाओ॥
दीन दयाल जीव हितकारी। राधास्वामी काज बनाओ॥

इन्सान बनकर ही इन्सान को समझा सकता है जानवर बनकर नहीं। इसलिए शरीर की महिमा है उससे ज्यादा शब्द की महिमा है जो मुँह से निकला। इसलिए शब्द गुरु कहा गया है।

गुरु का रूप क्या है-

साधो गुरु का रूप लखाऊँ॥

जो कोई आवे मेरी सभा में, गुरु का रूप लखाऊँ॥
सत रज तम के हद से बाहर, गुरु मूरति दरसाऊँ॥
निर्गुन सगुन देह नहीं जाके अद्‌भुत भेद जताऊँ॥
हाड़ माँस नाड़ी नहीं जाके, बाके रूप न नाऊँ॥
सबका सबमें सबसे न्यारा, मरम विचित्र जताऊँ॥
रूप अरूप स्वरूप अनूपा, निराका ठहराऊँ॥
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, पल पल गुरु गुन गाऊँ॥
साधु गुरु का रूप लखाऊँ॥

उस गुरु का न हाड़ है न माँस है। उसमें न रजोगुण है, न तमोगुण है, न सतोगुण है। वह सबमें और सबसे न्यारा है। तुम आत्मा के रूप से एक हो और सुरत के रूप से भी एक हो। उसी महापुरुष ने जिसने स्वामी जी महाराज से प्रश्न किया कि गुरु का रूप दिखाओ। उसी ने राधास्वामी शब्द को प्रकट किया। 'राधा' क्या है? ये राधा वो नहीं जो दुनिया कहती है। यह वो धारा है, वो हस्ती है, मालिके-ए-कुल की अंश वहाँ से उसके दरबार से आयी।

लख अकाशाँ आकाश, लख पताना पाताल

वह है, वहाँ से हमारी सुरत धारा के रूप में आयी। यहाँ आकर वह अहम् से मिल गई मन, चित्त, बुध अहंकार सबसे मिल गई और शरीर में उतर गई और हमारे संसार का खेल, खेल रही है। हमने उसको उलटाना है और उसको वापिस ले जाना है। जब उसको

वापिस भेजने के लिए उलटेंगे वह राधा बन जाएगी। धारा नहीं रहेगी वह राधा बन जायेगी। राधा कहाँ से आयी? वह उस मालिके-ए-कुल की हस्ती से आयी।। वहाँ से जब वह पैदा हुई क्या निकला? शब्द और रौशनी। रौशनी बनकर वह आत्मा बनकर आ गई और शब्द के रूप में हमारे अन्तर में सुरत बनकर आ गई। जब तक शरीर की पाँच कर्मेन्द्रियाँ पाँच ज्ञानेन्द्रियों मन चित्त, बुध अहंकार से आगे नहीं जायेगी वह सुरत रूप आत्मा रूप नहीं बन सकती। जब भी तुम उसके दरबार में पहुँचोगे तो वहाँ क्या है- वहाँ मय गवाच गई ते मैंनु कि होया। वहाँ तुम्हारी मय नहीं रहती। जब तुम्हारी मय नहीं रही तो फिर तुम क्या हो गए; तुम उसी के हो गए। जब उसी के हो गए तो दुनिया में माँगने की कोई जरूरत नहीं रहती है। मगर यह बात कठिन है, इसीलिए मैंने कहा पहले थक जाओ। थकने के बाद तुम थोड़ा आराम महसूस करोगे कि अब आराम चाहिए। शारीरिक रूप से भी आराम चाहोगे, मानसिक रूप से भी आराम चाहोगे, मानसिक रूप से भी आराम चाहोगे। हमारे शरीर का आनन्द है- आँखों से देखना, कानों से सुनना, जुबान के रस लेना, कर्मेन्द्रियों के प्रयोग करना और ज्ञानेन्द्रियों के प्रयोग से भी कुछ सुख मिलता है। लेकिन वह सुख सदा रहने वाला नहीं है। जब तक दाँत हैं भोजन स्वाद लगेगा। जब दाँत चले गए भोजन का स्वाद चला जायेगा। जब तक कान ठीक काम कर रहे हैं तो बड़ा आनन्द है नहीं तो फिर मशीन लगानी पड़ती है। दुनिया की हर बात सुनने के काबिल नहीं है। दुनिया का हर दृश्य देखने लायक नहीं

है और हर चीज खाने के काबिल नहीं है। यदि देखने पर नियंत्रण हो गया, सुनने पर नियंत्रण हो गया, बोलने पर नियंत्रण हो गया, खाने पर नियंत्रण हो गया, तो तुम तो इंसान बनने लग गए। पहले केवल इन्सान का रूप था अब तुम इन्सान के रास्ते पर आ गए हो। Mind is Lover of Variety मन तरह-तरह के आनन्द लेना चाहता है और उस आनन्द में हमारे शरीर का दुरुपयोग करता है।

मन एक है, इस एक को एक के हवाले कर दो। गुरु शब्द है, जो मुख से उसने बोला वह गुरु है। शरीर गुरु नहीं है लेकिन मेरे सद्गुरु परमदयाल जी महाराज का शरीर मेरे लिए पूजनीय था।

तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेषा।
दुखी जीब को अँग लगा के लेजा गुरु के देशा॥

मेरे दाता कहा करते थे अरे! मैं ही नहीं वहाँ से आया तुम सभी भी वहीं से आये हो। हम सभी एक ही देश के वासी हैं, हमारा कोई दूसरा देश नहीं है। ये और बात है जहाँ-जहाँ हम टिके हुए हैं शरीर छोड़ने के बाद वहाँ जाएँगे। चौदह लोक हैं- पितृ लोक, रामलोक, शिवलोक, कृष्णलोक, विष्णुलोक, शक्ति लोक बहुत सारे लोक हैं। जो जिसकी पूजा करेगा व उस लोक में जायेगा। तुमने किसकी पूजा करनी है? हमने उसकी पूजा करनी है जिस लोक में हम आए हैं। वहाँ कैसे पहुँचेंगे? हम शब्द रूप से वहाँ से आए, प्रकाश रूप से आए तो इसी जिन्दगी में प्रकाश शब्द रूप होना पड़ेगा।

तुम मन और शरीर के लेबल से उठो। एक मिनट या दो मिनट के लिए बैठो। तुम अपने अन्दर झाँक कर देखा करो कि तुम कौन हो। जिस दिन तुम्हारे अन्दर ये सवाल पैदा हो गया कि मैं कौन हूँ तुम्हें बताने वाला आ जायेगा कि तुम ये हो। तुम मेरा ही रूप हो सिर्फ शरीर का फर्क है, मन का फर्क है। एक शब्द कान से सुना जाता है और एक शब्द मन से सुना जाता है। मन के भी कान हैं, मन की भी आँखें हैं स्वप्न में जाकर तुम देखते नहीं हो। मन की भी जुबान है, मुँह है मन खाता भी है। स्वप्न में तुम खाते भी हो। मन की भी आँखे हैं, मन का भी चेहरा है वह स्थूल रूप है, सूक्ष्म रूप है।

हमारा तीसरा रूप प्रकाश रूप है। हम उसको भी अपने अन्दर देखते हैं। जब तुम गुरु के बताए हुए मार्ग पर चलोगे तुम्हारे अन्दर प्रकाश ही प्रकाश हो जायेगा। उसको ब्रह्म कहते हैं। शरीर सबल ब्रह्म के साथ चलता है। ब्रह्मचर्य सबल ब्रह्म है। मन शुद्ध ब्रह्म से चल रहा है, अच्छे विचारों से चल रहा है इसलिए परमदयाल जी महाराज कहा करते थे- शिवसंकल्पमस्तु।

हमेशा नेक ख्याल रखो, भले ख्याल रखो, अच्छे ख्याल रखो, दूसरों का भला चाहो तुम्हारा मन शुद्ध हो जायेगा। आत्मा की भी आँख है। जब हम आत्मा के लेबल पर पहुँचते हैं वहाँ प्रकाश भी नजर आता है और सत् सत् सत् की आवाज भी आती है। कुछ लोगों को बीन भी वहाँ सुनती है। जब हम वहाँ से आगे चले जाते हैं तो वो

एक अथाह सागर है। हम उस सागर की किरण हैं। सुरत रूप की कोई सीमा नहीं है। जो विशाल का अंश है वह विशाल ही होगा। जो सीमित का अंश है वह सीमित में ही होगा। शरीर सीमा में है, मन असीम है, आत्मा उससे भी असीम है और इसमें रहने वाला परमेश्वर उससे भी असीम है।

आज के दिन सद्गुरु परमदयाल जी के दरबार में मैं चाहता हूँ कि ये बड़ा पवित्र दिन है। सारे देश में जगह-जगह सद्गुरु की पूजा हो रही है। वे शरीर की पूजा कर रहे हैं। शरीर की पूजा से तुम्हें शारीरिक सुख मिलेगा लेकिन सबसे बड़ी चीज जो प्राप्त करनी है-

जाके गुरु के पास बैठो और वचन उनके सुनो।
जो सुनो उसको विचारो जो विचारो उसको गुनो॥

उस मालिक-ए-कुल की, उस परम तत्त्व की परमदयाल जी महाराज की आज के दिन जो पूजा करता हूँ वह मैं आपको बताता हूँ। एक है- गुरु की भक्ति। गुरु की भक्ति तुम अब कर रहे हो-

दर्शन करे वचन पुनि सुने, सुन सुन नित मन में गुने
गुन गुन काढ़ लये तिस सारा, कढ़ सार तस करे आहारा
कर आहार पुष्ठ हुआ भाई, जग भव भय सब गई गवाई

ये भक्ति है। इसलिए सत्संग की गुरुमत में बहुत ब ड़ी महिमा है-

बिन सत्संग विवेक न होई।

किताबों में ये चीज़ नहीं मिलेगी। अगर मिलेगी भी तो तुम्हारे पल्ले नहीं पड़ेगी। एक भक्ति है और एक सेवा है। सेवा क्या है? मैं तुम्हारी सेवा कर रहा हूँ। मैं तुम्हारी सेवा अपने वचनों से कर रहा हूँ। मैं अपने गुरु का ज्ञान तुम्हें बाँट रहा हूँ यह मेरी सेवा है। उन्होंने ये कहा है- जो मेरी शिक्षा को निस्वार्थ मन से फैलायेगा मेरी वही सेवा होगी। तो मैं आप लोगों की सेवा कर रहा हूँ।

गुरु की पूजा कैसे हो सकती है? तुम समझते हो माला चढ़ा कर पूजा हो गई। कुछ पैसे दे दिए पूजा हो गई। गुरु की असली पूजा गुरु के बताए हुए वचन पर चलना, उसके अनुसार अपने जीवन को जीना गुरु की असली पूजा है। गुरु के वचन पर तो चले नहीं, गुरु की बात को अपनाया नहीं। गुरु ने कहा बच्चा कभी किसी का बुरा मत सोचना। आपने यह छोड़ा नहीं फिर आप कैसे पूजा कर रहे हो उसने कहा हक की कमाई खाना, क्या तुम ऐसे जीते हो। अगर पूजा करनी है तो जो गुरु नियम बताते हैं उस पर चलो। तुम्हें जिन्दगी में शारीरिक सुख भी मिलेगा, मानसिक शान्ति भी मिलेगी, आत्मिक ज्ञान भी मिलेगा और तुम्हें अपना भी ज्ञान हो जायेगा कि तुम कौन हो। बाकि तो डुगडुगी बजाना है। मैं डुगडुगी बजाना नहीं जानता न मेरे बाबा ने मुझे बताया। **सच्ची बात कहना और सदा सुखी रहना।**

गुरु के रूप को दुनिया ने नहीं समझा कि गुरु है क्या। बस दौड़े हुए हैं और कलयुग में अंधेर है। कबीर साहिब ने कहा-

डर लागे मुझे हांसि आवे

ये दुनिया कितनी दीवानी है

सब ये सोचते हैं। सबने मर जाना है बस मैंने नहीं मरना। जाना है, तो जाना है वह अच्छा होना चाहिए। पुराने जमाने में जब लड़कियाँ ससुराल जाती थीं दहाड़े मारकर रोती थीं। आजकल जमाना बदल गया । आजकल लड़कियाँ शादी में रोती नहीं है, मुझे बड़ी खुशी है। पति के घर जा रही हैं फिर रोना क्यों। जब हमने भी अपने पति के घर जाना है, हम भी हँसकर चलें तो कितना आनन्द आयेगा। जब हम भी उसके पास वापिस जाएँ तो हँसते हुए जाएँ वह भी खुश होगा कि मेरा बेटा गया था कुछ करके आया है रोता नहीं है वह गले लगा लेगा–

गुरु रूप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी॥
गुरु को मानुष जानकर, भक्ति का करें व्यौहार।
सो प्रानी अति मूढ हैं, कैसे जायें भव पार।
देह के बने अभिमानी॥
गुरु रूप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी॥
गुरु को मानुष जानकर, शीत प्रसादी ले।
सो तो पशु समान हैं, संशय में अटके।
गुरु तत्त्व न जानी॥
गुरु रूप ने समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी॥

गुरु को मानुष जानकर, मानुष करो विचार।
सो नर मूढ़ गँवार हैं, भूल रहे संसार।
मोह के फाँस फँसानी॥
गुरु रुप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी॥
गुरु को मानुष जानकर, भेड़ की चलते चाल।
वह बन्धन को क्यों तजें, व्यापे माया काल।
पड़े योनि की खानी॥
गुरु रूप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी॥
गुरु नाम आदर्श का, गुरु है मन का इष्ट।
इष्ट आदर्श को न लखे, समझो उसे कनिष्ट।
बात बूझे मन मानी॥
गुरु रूप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी॥
गुरु भाव घट में रहे, अघट सुघट की खान।
जिसे समझ ऐसी नहीं, वह है मूढ़ समान।
नहीं गुरु रूप पिछानी॥
गुरु रूप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी॥
चेला तो चित में रहे, गुरु चित के आकास।
अपने में दोनों लखे, वही गुरु का दास।
रहे गुरु पद घट ठानी॥
गुरु रुप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी॥

सुरत शिष्य गुरु शब्द है, शब्द गुरु का रूप।
शब्द गुरु की परख बिन, डूबे भरम के कूप।
नर जनम गँवानी॥
गुरु रूप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी॥
गुरु ज्ञान का तत्त्व है, गुरु ज्ञान का सार।
गुरु मत गुरु गम लखे, फिर नहीं भव भय भार।
कमल जैसी गति आनि॥
गुरु रूप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी॥
राधास्वामी सतगुरु सन्त ने, कही बात समझाय।
जो नहीं माने वचन को, उरझ उरझ उरझाय।
कौन समझे यह बानी॥
गुरु रूप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी॥

आपने सुना गुरु रूप क्या है ? सुरत शिष्य है और शब्द गुरु है। वह तुम्हारे अन्दर है। बाहर के शब्द को पकड़कर अन्दर के शब्द को पकड़ना है। अन्दर मन के रूप में बहुत शब्द हैं। मुझे कई बार फोन आते हैं बाबा जी हमारे अन्दर प्रकाश हो गया है, बड़ा आनन्द है। उनको ये नहीं पता कि ये प्रकाश काहे का है। मन के छः केन्द्र हैं। हमारे शरीर के छः केन्द्र हैं- मूलाद्धार, इन्द्री, नाभि, हृदय, कंठ और मस्तिष्क। ऐसे ही मन के छः केन्द्र हैं- तीसरा तिल है, सहस्रदलकमल है, त्रिकुटी है, सुन्न है, महासुन्न है, भंवरगुफा है और

आगे सतलोक है। हमारा शरीर पिंड देश है। पिंड देश दुनिया में काम करने के लिए है अंग देश इसकी शक्ति का प्रयोग करने के लिए है।

मन नहीं है तो मन के बगैर तुम कोई काम नहीं कर सकते हो। मन सुरत की ताकत के बगैर कुछ भी नहीं है। आँख की अपनी ताकत कोई नहीं है, कान के सुनने की अपनी ताकत कोई नहीं है जब तक वो हस्ती यहाँ न आये और जब आँख में वो हस्ती आती है तब हम देखते हैं। प्रकाश आया तो दिखने लगा। क्या अंधेरे में कुछ नजर आता है ? नहीं। प्रकाश ही हमारे जीवन को चलाने वाला है और इसकी हस्ती हमारी सुरत है। जहाँ भी प्रकाश होता है उसको अलख निरंजन कहते हैं। वह निरंजन हमारी दुनिया बनाता है। यहाँ (मस्तक) से विचार उठता है और तुम उसके पीछे लग जाते हो तो यहाँ पर सिमरन किया करो। सिमरन करोगे तो मन ठहर जायेगा जैसे ही ठहरेगा उसमें बहुत बड़ा बल आ जायेगा और तुम जिन्दगी में कामयाब हो जाओगे।

दूसरा स्थान त्रिकुटी का है। जहाँ पर मुख का रूप नजर आता है। एक देखने वाला है और एक देखने वाले का प्यार है और एक गुरु है। त्रिकुटी में प्रकाश थोड़ा लाल रंग का होता है और गुरु का रूप आता है वहाँ बम-बम की आवाज आती है बादल गरजने की या जैसी तुम्हारी प्रकृति है उसके मुताबिक वहाँ आवाज आयेगी जिनको ओम् शब्द का संस्कार है उनको ओम् सुनाई देगा। आगे महासुन्न है। महासुन्न में हमारा शरीर सुन्न हो जाता है और मस्ती सी आने लगती

है। महासुन्न में मन भी सुन्न हो जाता है। वहाँ मस्ती है आनन्द है और कुछ नहीं संत उसे अच्छा नहीं समझते। आगे भंवर गुफा आती है जिसमें आत्मा मन से अलग होने लगती है। आपके अन्दर ज्ञान पैदा हो जाता है कि मैं मन नहीं कुछ और हूँ वहाँ तुम्हारी दुविधा खत्म हो जायेगी, वहाँ द्वेषपना खत्म हो जायेगा। मैं और हूँ मन और है कि भावना आ जायेगी। जब तुम उससे भी आगे जाओगे तो महसूस करोगे कि मैं प्रकाश नहीं हूँ प्रकाश को देखने वाला हूँ, शब्द नहीं हूँ शब्द को सुनने वाला हूँ जब यह स्थिति हो गई तो गुरु का रूप हो जाओगे। तुम्हें दुनिया की दौलत मिल जायेगी, तुम शंहशाह बन जाओगे–

चाह गई चिन्ता मिटी मनुवा बेपरवाह

जिसको कुछ नहीं चाहिए वो शाहों का शाह।

वहाँ पर किसी चीज की इच्छा नहीं होती। जब तक इच्छा है निराशा साथ रहेगी। जब तक आशा है निराशा साथ रहेगी। जब तक ख्याल है तब तक दुख लगा हुआ है। ख्याल पूरा हो गया खुशी हो गई अगर ख्याल पूरा नहीं हुआ तो दुखी हो जाओगे। उसकी बाँह पकड़ लो अरे! दुनिया मेला है। कुछ माँगने की जरूरत नहीं बस उसकी बाँह मत छोड़ो।

मैंने बहुत कुछ दिया। मेरे सदगुरु, मेरे परमदयाल जिनका नाम बाबा फकीर चन्द। फकीर चन्द जी नाम उनके जन्म से पहले ही

एक फकीर ने रख दिया था। उनके पिता जी को कहा मस्तराम, तेरे लड़का होगा उसका नाम फकीर रखना। आप उनके दरबार में बैठे हो जिसने सत्य का जीवन व्यतीत किया और तलवार की धार पर चलकर गुरु की आज्ञा का पालन किया, आप उस महापुरुष के दरबार में बैठे हो। उस महापुरुष के दरबार में मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ तुम सब सुखी हो, मालिक आप सबको तन्दुरस्ती दे, आपको खाने को रोटी दे, पहनने को कपड़ा दे, रहने को मकान दे, मन को शान्ति दे उससे भी ज्यादा अपनी कृपा कर दे कि तुम्हें पता लग जाये कि मैं कौन हूँ। सबको राधास्वामी।

राधास्वामी, राधास्वामी

आभार प्रकट

निम्नलिखित सज्जनों ने मानवता मन्दिर होशियारपुर में सहयोग राशि दी है। परमपूज्य परमदयाल जी महाराज की परमकृपा इन सज्जनों व इनके परिवारों पर सदैव बनी रहे। ट्रस्ट इनके प्रति अपना आभार प्रकट करता है। -सचिव

S.No.	DONOR	Amount
1.	Prem Lata Gupta, Delhi	24500/-
2.	Late Sh. Nand Sihra's Family, Canada	21000/-
3.	Manjeet Singh (Sonu), USA	20000/-
4.	Ex-Hav. Krishan Gopal, Delhi	11000/-
5.	Raj Rani, Faridabad	11000/-
6.	Praveen, Rampragth	11000/-
7.	Jagwanti Devi, Khunyara (HP)	10000/-
8.	Dr. P.L. Sharma, Shimla	5100/-
9.	Sanjiv Ved Prakash	5001/-
10.	Jora Ram Chaudgary, Pali (Raj.)	5000/-
11.	Alka, Noida	5000/-
12.	Mrs. & Mr. Rajiv Joshi, Hoshiarpur	4000/-
13.	Radha Swami Studio, Mumbai	5001/-
14.	Late Sub. Maj. Karam Singh, Passi Kandi	3300/-
15.	Hardyal Singh, Hoshiarpur	2500/-
16.	Padam Sharma, Delhi	2500/-
17.	Veneet Saini, USA	2100/-
18.	R.G. Kulkarni, Thane	2000/-
19.	Praveen Sareen, Jalandhar	2000/-
20.	B.S. Sharma, Sihor Pain (HP)	2000/-
21.	Pushpa, Delhi	2000/-
22.	Chander Kailash, Hissar	1650/-
23.	Anand Singh, Harchowal	1500/-
24.	Mohan Lal Bagga, Hoshiarpur	1600/-
25.	Raksha Devi, Gagret	1300/-
26.	Ram Niwas Tanwar, Mohindergarh	1100/-
27.	Arun Kumar	1100/-
28.	Mahesh Kumar	1100/-
29.	Ashok Khetrapal, Panchkula	1100/-
30.	Tek Singh, Ludhiana	1100/-
31.	Sardar Studio, Adampur Doaba	1100/-
32.	R.S. Pathania, Nagrota Bagwan	1100/-
33.	Durga Dass, Jalandhar	1100/-
34.	J.R. Rajput, Chandigarh	1100/-
35.	Bimla Ladhar, Jalandhar	1100/-
36.	Bhuvnesh., Ramprasth	1100/-
37.	Giri Raj Singh, Delhi	1100/-
38.	Rajinder Singh, Hoshiarpur	1100/-
39.	Deepak Kumar, Jammu	1100/-
40.	Vijender Kumar, Meerut	1100/-
41.	Amar Chand Jakhar, Agroha	1100/-
42.	Phoolwati, Sabherwal	1100/-
43.	Shakti Chand Sharma, Jasai (HP)	1100/-
44.	Raghuwar Dayal & Sons, Amritsar	1000/-
45.	Munni Sharma/Umesh Sharma, Billari	1000/-
46.	Satpal, Sarson Heri	1000/-
47.	Dayal Enterprises, Mishrik	1000/-

48.	Kamla Luthra, Hoshiarpur	1000/-
49.	Late Sh. Sukhdev Singh Ji, Budhawar	1000/-
50.	R.L. Agnihotri	1000/-
51.	Ramandeep	1000/-
52.	Dr. R.K. Anand, Ahiyapur	750/-
53.	Narinder Chopra, Jalandhar	600/-
54.	Ganesh C. Kaushal, Adampur Doaba	600/-
55.	Savitri Devi, Mahilpur	511/-
56.	Suraksha Devi, Pandori	510/-
57.	Om Prakash, Hissar	500/-
58.	Ishwar, Hissar	500/-
59.	Vinod Sharma, Jalandhar	500/-
60.	Amin Chand, Sheikhupur	500/-
61.	Jaideep, Sonipat	500/-
62.	Brijen K. Srivastava, Sitholi (HP)	500/-
63.	Lokesh, Delhi	500/-
64.	Padam, Roorkee	500/-
65.	Satpal, Delhi	500/-
66.	Inderjit, Harchowal	500/-
67.	Hakikat Rai, Amritsar	500/-
68.	Varinder Kumar, Hoshiarpur	500/-
69.	Sanjay, Mubarakpur	500/-
70.	Kashmiro Devi, Hamirpur	500/-
71.	Kamaleshwar, Khunyara	500/-
72	Dharam Veer Singh, Gagret	500/-
73.	Ambala Chat House, Hoshiarpur	500/-
74.	Harpal Singh, Gautam Budh Nagar	500/-
75.	Satish Kumar, Hoshiarpur	500/-

76.	Deepak Rathore, New Delhi	500/-
77.	Col. Randhawa, Jalandhar	500/-
78.	Urmila Bansal, Delhi	500/-
79.	Sarangi Bala, Jalandhar	500/-
80.	Gopal	500/-
81.	Kamla Devi	500/-
82.	Satish K. Sharma, Moradabad	500/-
83.	Neelam Sharma, Hoshiarpur	500/-
84.	Bharat Bhushan, Jagadhari	500/-
85.	Kanta Devi, Chandigarh	500/-
86.	Gurdial Singh, Sarsonheri	500/-
87.	Vidya Sagar, Hoshiarpur	500/-

सूचना

सभी दानी सज्जनों, सत्संगियों से अनुरोध है कि जो धनराशि मानवता मन्दिर, होशियारपुर में भेजना चाहते हैं, उनकी सुविधा के लिए हम **Punjab National Bank, Hoshiarpur** के दो **Account Numbers** दे रहे हैं। इच्छुक सत्संगी **Faqir Library Charitable Trust A/c No. 0206000100057805, IFSC Code-PUNB0020600** और **Manavta Mandir Hoshiarpur A/c No. 0206000100209756, IFSC Code-PUNB0020600** में जमा करवा सकते हैं। कृपया जो भी राशि जमा करवायें उसकी रसीद की एक कॉपी अपने पत्र के साथ मंदिर कार्यालय में भेज दें अथवा सूचित कर दें, ताकि दानी सज्जनों की सूची में उनका नाम प्रकाशित किया जा सके तथा रसीद भी भेजी जा सके।

सचिव,

फ़कीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर।